इल्लुमिनाति

उदय राज सिंह
धीरज चौधरी 'दिवेश'

खण्ड – 1
भाग 1 से 10

इल्लुमिनाति

खण्ड – 1

भाग 1 से 10

लेखक

उदय राज सिंह

सम्पादक

धीरज चौधरी 'दिवेश'

प्रकाशक : धीरज कंप्यूटर
आवरण : धीरज चौधरी 'दिवेश'
आवरण सज्जा : धीरज चौधरी 'दिवेश'
डिजिटल मुद्रक : धीरज कंप्यूटर दिल्ली – 5
मुद्रक संपर्क : 8586918719, 8851073363
संस्करण : 2017

क्या है इल्लुमिनाती ?

क्या सारा विश्व पैशाचिक संस्था इल्लुमिनाति के नियंत्रण में है?

आइये आज आपको बताते है वो गुप्त रहस्य जिसे उजागर करने वाले अधिकतर लोगो की हत्या की जा चुकी है या फिर उनको गुमनामी की ज़िन्दगी जीने पर मजबूर कर दिया गया है!

ILLUMINATI अर्थात प्रबुद्ध या सबसे अधिक बुद्धिमान लोगों का समूह!

बहुत से मित्रो को ये भी नहीं पता होगा की आखिर ये इल्लुमनिती है क्या बला ?

तो मित्रो इल्लुमनिती दुनिया के सबसे शक्तिशाली लोगो
का एक सीक्रेट संगठन है, जो की पूरी दुनिया पर कब्ज़ा करना चाहता है!
इसके मुख्य उद्देश्य है पूरी दुनिया में बिना किसी बॉर्डर
के सभी देशो में एक मुद्रा एक संस्कृति, एक सभ्यता,
एक जाति विशेष का एकछत्र साम्राज्य हो!

इसके लिए इन्हें जनसख्या पर भी नियन्त्रण करना है, जिसका एक ही एक उपाय है लोगो का जातीय सामूहिक
संहार फिर चाहे वो प्रथम विश्व युद्ध करवाना हो या
द्वितीय या भारत पाक युद्ध या फिर वियतनाम अमेरिका
युद्ध, या अफगानिस्तान पर अमेरिकी हमला, या अब
तीसरे विश्वयुद्ध के साथ साथ जल-युद्ध और परमाणु
युद्ध की तैयारी!

इस संगठन पर वर्तमान में यहूदियों और कुछ सीमा तक ईसाईयों का कब्ज़ा है!

यहूदियों से इसलिए क्यूंकि अमेरिका में भी उन्ही का दबदबा है और इल्लुमनिती को अधिकतर फण्ड वही से मिलता है!

पूरी दुनिया में इल्लुमनिती का सबसे बड़ा दुश्मन और एक मात्र शत्रु है **सनातन** !

जी हाँ **सनातन धर्म** इल्लुमनिती का सबसे बड़ा शत्रु है!

किसी भी देश में कोई भी सत्ता बिना इनके हस्तक्षेप के नहीं चल सकती!
शायद कुछ लोगो को ये बात हजम न हो पर भारत में कोई भी सरकार चाहे वो आ चुकी है या आने वाली है वो
इन्ही के इशारों पर चली है और चलेगी!

इनका सबसे बड़ा प्रोजेक्ट एक और है!
एक फिल्म है **The Resident Evil** और भारत में बनी हुई **Go Goa Gone**, इन सभी में एक ही समानता है!

लोगो को वायरस द्वारा अर्द्धमृत कर देना और उनकी
बुद्धि पर नियंत्रण करना इलुमनिती वायरस द्वारा
भी माध्यम व् गरीब लोगो का समुहिक संहार करने के प्रोजेक्ट पर काम कर रही है और इसके लिए उन्होंने लोगो के मन में डर बैठाने के लिए हॉलीवुड और बॉलीवुड का सहारा लिया है!

उपर लिखे 2 नाम तो केवल एक मोहरा है!
लिस्ट काफी लम्बी है जिस वायरस पर इल्लुमिनाती
संगठन अब तक कार्य कर रहा है उसका केवल एक
ही तोड़ है!

और वो है यज्ञ!

यज्ञ न केवल हानिकारण किरणों, गैसों, बल्कि जैविक परमाणु और अन्य रासायनिक हथियारों को आराम से निष्क्रिय कर सकता है!

चावल जो की सबसे अच्छा Anti-Atom पदार्थ है!

इसकी यज्ञ में आहुति से पूरा वातावरण परमाणु विकिरण से मुक्त हो जाता है!
इसके अतिरिक्त और भी हजारो ऐसे पदार्थ या हवन सामग्री में प्रयोग होने वाले तत्व है जो इनसे मुक्ति दिला सकते है!

इलुमनिती का सबसे मुख्य कार्य इस समय **सनातन धर्म** को ही समाप्त करना है!

इसके कारण बहुत है!

पहला सनातन धर्म में अध्यात्म और ईश्वरीय तत्व जहाँ अध्यात्म व् ईश्वरीय आभास होगा वहां पर पैशाचिक विचारो का होना असंभव है!

सनातन धर्म को समाप्त करने के लिए ही इस्लाम और
ईसाईयत को पुरे देश में इल्लुमनिती द्वारा बढ़ावा दिया जा
रहा है!

जिस कारण बड़े पैमाने पर मुसलमानों द्वारा धर्मान्तरण, लव जिहाद, दंगे आदि हो रहे है!

इल्लुमिन्नाति का उद्देश्य किसी विशेष समुदाय
का समर्थन करना नही है!

केवल अपने लाभ के लिए ये एक मजहब के दुसरे मजहब के विरुद्ध प्रयोग करते है।

अब आप इल्लुमिनाती का इतिहास जानिए!

गोड (God) कौन है किसी को मालुम नही पर
उसने एक बार अब्राहम को पास बूला कर कहा की
तूझे और तेरी संतानों को पूरी पृथ्वी आशिर्वाद के रूप में देता हुं!

तब से अब्राहम अपने आप को पूरी पृथ्वि का मालिक समझने लगा, और अपने बच्चों को भी बताता रहा!

अब्राहम जिस जीवन शैली से रहता था उसे यहुदी धर्म कहा गया!

कुछ पिढियों के बाद उसके विशाल परिवार वैचारिक हिस्से में बंट गया!

इशा नाम के आदमी ने दावा किया की मैं गोड की पसंद हुं मै कहता हुं ऐसे जीना है और वो ही हमारा धर्म है और
इसाई धर्म की स्थापना कर दी!

मोहम्मद नाम का आदमी बोला मै ही खुदा की पसंद हुं!
मैं जो कहुं वो ही धर्म है और इस्लाम की स्थापना हो गई!

ऐसे एक संप्रदाय से तीन तीन संप्रदाय पैदा हुए!
1.यहुदी 2.इस्लाम 3.ईसाई

तीनों दावा ठोकने लगे हम लोग ही उपरवाले की पसंद है! हमें ही पृथ्वी भेंट में मिली है हमे ही उस पर राज करना है!

पृथ्वी पर अधिकार के लिए इस्लाम और इसाई प्रजा क्रुजेड और जेहाद के नाम पर सदियों तक कटती रही!

यहुदी प्रजा जगत की अन्य प्रजा की तरह इन दोनों
की शिकार होती रही!

साथ में अलग तरिके से मजबूत बनती रही!

अपना सारा ध्यान व्यापार में लगा दिया और आज की
तारिख में धन के बल पर उसी प्रजा ने साबित कर दिया
की गोड की पसंद के लोग वही है और उसे ही राज करना है!

जी हां हमारे बन बैठे मालिकों की बात लिख रहा हुं!

ये मालिक ब्रिटन के राजमहेल से दूर अपना ही एक अलग छोटा सा टाउन बना के रहते थे!

इस टाउन की नीव इसा की पहली सदी में रोमन व्यवसायीयों ने डाली थी!

युध्ध होते रहे राज परिवार बदलते रहे!

हजार साल पहले, सन 1067 इ० में राजा के साथ समजौता किया गया कि इस टाउन के नागरिक हमेशा राजा के वफादार रहेंगे राजा को जितने भी धन की जरूरत पडे ये नागरिक देंगे लेकिन शर्त इतनी की राजा कभी भी उनके काम में कोइ दखल न दे!

राजा का कोइ भी कानून इस टाउन को लागू नही होंगे!

1 मई 1776 इसे संस्था का रूप दिया गया!
और नाम रखा **इल्लुमिनाती** !

लंडन शहर के बिचो बीच आज भी 677 एकड़ का एक छोटा सा 8000 की आबादी वाला स्वतंत्र देश “सिटी ओफ लंडन कोर्पोरेशन” मौजुद है!

इस सिटी के आदमी इस सिटी से बाहर ब्रिटन की कीसी भी संस्था में बडे पद पर लग जाता है लेकिन बाहर का आदमी इस सिटी में कभी बडे पद पर नियुक्त नही होता!

ब्रिटेन की पार्लियामेंट में भी चुन के जाते है लेकिन इन पर वहां का कानून लागु नही होता!

इन का राज परिवार से सिधा संबंध है!

दिन में बाहर से दो ढाई लाख आदमी बाहर से काम के लिए आ जाते हैं!

विश्व की 500 बेंकों के, बडे बडी कंपनियो के हेडक्वोर्टर्स यहां पर है!

1. युनो (UNO), अमरिका का डिस्ट्रिक्ट ओफ कोलंबिया (जो अमरिका के कंट्रोल में नही है)
2. नाटो की सेना
3. युरोप के 13 राज घराना और अति घनवान परिवार
4. कमिटी-300 इन सब के अधिकारियों

कीमिटिन्ग सबके निर्णय से इस सिटी में लिये जाते हैं!

इनके काम दुनिया के देशों में किसे प्रमुख बनाना चाहिए किसे पद से उतारना है यहां तय होता है!

वेटिकन सिटी में किसे पोप बनाना है!
निर्णय ये लोग लेते हैं!

सारी दुनिया को कैसे हेंडल करना है वो सारे निर्णय यहां होते है!
इनका मकसद दुनिया की 75 % आबादी खत्म कर, बाकी बचे लोगो को गुलाम बनाकर दुनिया पर कब्जा कर लेना!
ये अपना काम बहुत गुप्त तरीके से करते है किसे राष्ट्रपति बनाना है, किसे हटाना है, सब कुछ यही तय करते है!

नेताजी सुभाष चन्द्र बोष की मौत में इनका हाथ था !
यह लोग शैतान को पूजते है मतलब अपनी आत्मा शैतान को गिरवी रख दी!
कुछ सेलिब्रिटी कम समय मे ही ज़्यादा लोकप्रिय हो जाते है उन सब मे इनका हाथ होता है!

एक तरिके से पूरी दुनिया पर इस सिटी का राज है!

न्यूयोर्क का वोलस्टीट इस का ही एक हिस्सा है!
यहां यहुदी ही रह गये हैं ऐसा नही है अब सारे धनपति आ गये हैं!
जिनका स्थापित धर्म के साथ लेना देना नही है!
उनका अपना **मॅसोनिक धर्म** है!
सिटी के बीच में **मेसोनिक लोज** (पूजा स्थल) है!

यहां **ल्युसिफर** नाम के शैतान की पूजा करते हैं!
और अपनी जात को क्रुरतम और निर्दयी बनाने के लिये भयंकर तांत्रिक विधी की सिद्धि भी कर लेते हैं!
और बलि की आवश्यकता पडने पर कभी बच्चों
की बली चढ़ाने में भी नही चुकते!

इस सिटी का मुखिया अभी चुनाव जीता है!

जिसे **लोर्ड ओफ मेयर** कहा जाता है!

इस समय इल्लुमिनाती एक सेक्रेट सोसाइटी के रूप में काम कर रही है! कहीं भी अपने आप को शो नहीं होने देती पर मौजूद है हर जगह भारत में भी!

जो भी लोग अमेरिका हित की फोर्ड हित की सीआईए एजेंट के रूप में काम कर रहे हैं!

समझ लीजिए इल्लुमिनाती वाले हैं या उनके एजेंट है!

सतर्क रहिये उनसे भारत की हर पार्टी में उनके एजेंट मौजूद हैं मिडिया तो समझिये उन्ही की है!

राष्ट्रवादी लोगो के वो दुश्मन होते हैं लन्दन में बैठे इल्लुमिनाती वाले राष्ट्रवादी लोगो को मरवा देते हैं या अपने में शामिल करने की कोशिश करते हैं!
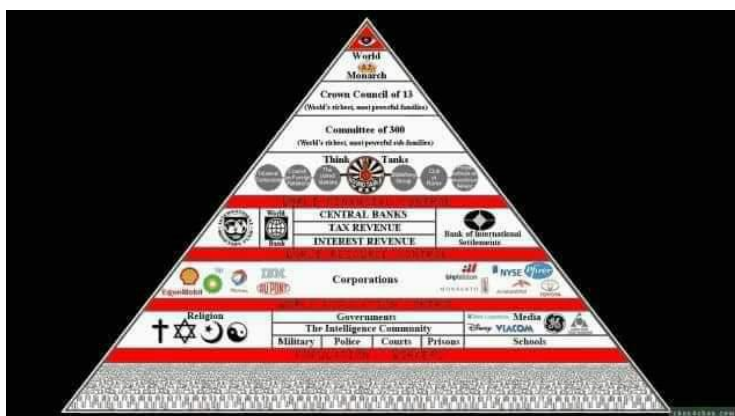
इल्लुमिनाति

इल्लुमिनाति और भारत्त में शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 1

भारत्त के प्राचीन ग्रंथों में पृथ्वी के निर्माण, प्राणियों, वनस्पतियों के निर्माण, दुनिया के विभिन्न नदियों, समुद्रों,पर्वतों का वर्णन दिया हुआ है और प्रथम मानव सप्तऋषियों से लेकर कलियुग तक का स्पष्ट वर्णन है

किंतु आश्चर्य है कि

आजाद भारत में प्रथम शिक्षामंत्री एक मुस्लिम को बनाया गया जिसको इतिहास, शिक्षा पद्धति का कोई ज्ञान नहीं था और पंडित रविशंकर शुक्ल जैसे अनेक हिन्दू विद्वान् को दूर रखा गया!

और जवाहरलाल नेहरू द्वारा जर्मन मैक्समूलर की किताबो पर आधारित डिस्कवरी आफ इंडिया किताब, पूरी तरह गप्प से भरपूर,लिखी गई,जिसमे आर्यों को घोड़े पर चढ़कर भारत्त आना बताया गया!

और यही इतिहास भारत्त के पाठ्यक्रम में पढ़ाया जाने लगा।

क्योंकि इसाई संस्थाए यही चाहती थी कि भारत्त की नई पीढ़ी पूरी तरह यूरोपीय प्रणाली को पढ़े और स्वयम को नीच अविकसित समझे, और गोरों को प्रतिभाशाली!

और 70 वर्षो में इलुमिनाती का ये उद्देश्य पूरा होता दिखाई दे रहा है!

मौलाना अबुल कलाम तो एक मोहरा थे!
नीतियां, पाठ्यक्रम तो अधिकारी बनाते है!

किसके इशारे पर ?

सोचो सोचो!

इल्लुमिनाति और भारत में शैक्षणिक षडयंत्र

भाग - 2

कक्षा 10 में यौन शिक्षा!

शायद 1985 में स्कूलों में 11वीं कक्षा के बाद 12वीं कक्षा को जोड़ा गया था!

इससे पहले केवल 11वीं तक ही स्कूली पाठ्यक्रम होता था जिसमे कक्षा 9 से विज्ञान या आर्ट्स या कॉमर्स विषय चुनने पड़ते थे!

12वीं कक्षा होने के बाद विषय चुनने का कार्य 11वीं से होने लगा!

फिर 1985 में ही कक्षा 10 में स्वास्थ्य जानकारी के नाम पर यौन शिक्षा का एक अध्याय, जीव विज्ञान विषय में पढ़ाया जाने लगा जिसमे महिला , पुरुष के गुप्त अंगो का सचित्र विवरण होता है!

कक्षा 10वीं ही क्यों चुनी गई ?

हमारे भारत देश में केवल सेटेलाइट के विषय में ही शोध होते है ऐसा लगता है जबकि यूरोप के वैज्ञानिक, मनुष्य की प्रतिदिन की प्रत्येक गतिविधि पर रिसर्च करते है!

सुबह जागने से लेकर सोने तक एवम सोने के बाद भी!

तो यूरोप के वैज्ञानिकों ने रिसर्च की और पाया कि 15-16 वर्ष की उम्र लड़के लड़कियों में अत्यंत संवेदनशीलता होती है!
जिज्ञासु प्रवृत्ति होती है शारीरिक परिवर्तन होने लगते है!

विशिष्ट हारमोन का उत्पादन होता है इसलिये इस उम्र में दूसरे लिंगी के प्रति आकर्षण स्वयम उत्पन्न होता है!

क्योंकि हारमोन का निकलना अभी आरम्भ हुआ होता है, इसलिये विशिष्ट उत्तेजना इसी उम्र में उत्पन्न होती है!

इस उम्र में भारत के पारिवारिक रूप से संस्कारित लड़के लडकियां विपरीत योनि की तरफ आकर्षित हो अपनी ऊर्जा और बुद्धि पढ़ाई खेल की बजाय सेक्सुअल बातो में लेने लगे!
इसलिये यूरोप के इशारे पर भारत में कक्षा 10वीं में ये अध्याय रखे गए ताकि भारत की युवा पीढ़ी भटकने लग जाए और भारत का भविष्य बर्बाद हो!

साथ ही इन कक्षाओ में एड्स की चर्चा की जाती है तो भारत में क्या 10वीं के बच्चों को एड्स होता है?
या होने की संभावना है?

क्या ये पाठ 12वीं की कक्षा या 6वीं कक्षा में नहीं रखा जा सकता था ?

क्या ये पाठ लड़कियों को अलग से महिला अंगो की जानकारी देना लड़को को अलग से पुरुष अंगो की जानकारी देने का कार्य नही हो सकता था ?

सर्वजनिक किताब में पुरुष महिला के गुप्त अंगो के चित्र क्यों ?

स्वास्थ्य रक्षा का अध्याय यदि रखना था तो क्यों सर्दी जुकाम, बुखार, आँखों, पेट के रोगों का अध्याय नही रखा गया जबकि ये रोग हर घर में होते है और आयुर्वेद, घरेलु औषधियों के माध्यम से ठीक किये जा सकते है!

गाय के दूध, घी, भोजन, हल्दी, जीरा, अजवायन, गुड़, मिश्री, ब्राह्मी, नीबू आदि के विषय में स्कुल में कोई अध्याय नही है!

जबकि समुद्र के अंदर पाये जाने वाले जीवो, वृक्ष के हर भाग का विशिष्ट वर्णन है जोकि प्रतिदिन के जीवन में किसी लाभ का ज्ञान नहीं है!

गायब जो है वो है चरक, शुश्रुत , धन्वंतरि, नागार्जुन, वाग्भट्ट आदि के महान आविष्कार !

पहचानिये कौन है वो लोग जो देश की शिक्षा पद्धति को भारतीय संस्कृति के विपरीत ले जा चुके आजादी के बाद से ही ?

संज्ञानात्मक!

इल्लुमिनाती और शैक्षणिक षणयंत्र

भाग-3

भारत की स्कूली शिक्षा पहले 11वी तक थी तो 9वीं में विशेष विषय विद्यार्थी चुनता था अब ये कार्य 11वी में होता है।

11वीं में जो लोग जीव विज्ञान विषय लेते है, उनको मेंढक चीरना पड़ता है, प्रेक्टिकल के रूप में क्यों??

11, 12 कक्षा का जीव विज्ञान का हर विद्यार्थी डाक्टर नही बन सकता था (और है) क्यंकि 1 लाख विद्यार्थी PMT परिक्षा में बैठते, तो सेलेक्ट केवल 228 होते है (मध्यप्रदेश में), क्योंकि मेडिकल कालेज में सीट ही इतनी होती थी!

अब ज़िंदा मेंढक चिरवाना क्या हर जीव विज्ञान विद्यार्थि से जरुरी है 11वीं, 12वीं में ?

षड्यंत्र क्या है इसके पीछे देखिए!

ये स्पष्ट बात है कि भारत्त में ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय, शूद्र
इन चार वर्णो में 1947 में ब्राह्मण, वैश्य का मांसाहारी होना असम्भव जैसा था!

ये भी आवश्यक नही था कि प्रत्येक राजपूत या प्रत्येक श्रमिक (शूद्र) भी मांसाहार करे। राजपूतों में युद्ध कर पाने, खून खराबा देख पाने की क्षमता विकसित करने हेतु मांसाहार उनके यहाँ वर्जित नहीं था किंतु अनिवार्य भी नहीं था!

अंग्रेजो ने प्रयास किया कि ब्राह्मण, वैश्य, जैन आदि समस्त शाकाहारी लोग मेडिक्ल चिकित्सा विज्ञान से दूर रहे!

ये तभी संभव था जब उनके पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से हिंसा का समावेश किया जाए इसलिये ये मेंढक चीरने वाला प्रेक्टिकल रखा गया!

यदि शाकाहारी हिन्दू बालक बालिका स्कुल में इस पाठ्यक्रम से दूर रहता (उनकी योजना, कल्पना अनुसार) तो फिर कौन पढता

ये विज्ञान इस्लाममिक विद्यार्ति मुख्यत: और बांटो और राज करो नीति के आधार पर कार्य करने वाले अंग्रेजो के लिये 1947 के बाद बहुत सारे षड्यंत्रकारी कार्य आसान हो जाते!

वैसे अब भारत्त में बहुराष्ट्रीय दवाई कम्पनियो के हाथों बहुत बड़े बड़े अस्पताल, बीमारियां, जांचे, अंग रिप्लेसमेंट आदि के कार्य बिक ही चुके है।

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 4

1947 से 2014 तक मुख्य रूप से देश में कांग्रेस का ही शासन रहा! और देश के अधिकांश राज्यो में भी!

कांग्रेस में हिन्दूवादी पंडित मदन मोहन मालवीय, गोपाल कृष्ण गोखले, पंडित रविशंकर शुक्ल, सुभद्रा कुमारी चौहान, आदि अनेकानेक विद्वान् रहे है और आज भी होंगे!

फिर भारत्त का स्कूली कालेजी इतिहास 1947 के बाद ही अचानक झूठा कैसे हो गया ?

क्यों श्री राम कृष्ण काल्पनिक हो गए ?

कैसे लुटेरे बालात्कारी मुसलमान शासक महान हो गए ?

कैसे मंदिरो को तोड़ कर बनाई गई मस्जिदो का कोई उल्लेख नही किताबो में ?

कैसे आर्य यूरोप से आकर भारत्त में रहने का झूठ पढ़ाया गया ?

कैसे प्राचीन ऋषियो के नाम, उनके आविष्कार पूरी तरह गायब हो गए किताबो से ?

कैसे आयुर्वेद का 1 शब्द का उल्लेख भी नही होता किताबो में? जबकी महिला की सिजेरियन पध्दति, प्लास्टिक सर्जरी, अँग रिप्लेसमेंट आपरेशन भारत्त में ऋषि वैद्य करते रहे थे!

कैसे भगत सिंह, सिख गुरु गुंडे कहे गए किताबो में ?

ये आरोप लगाया जाता है कि वामपंथियो ने गलत स्कूली कालेजी अध्याय लिखकर भारत के इतिहास को विकृत किया गया!

अब वामपंथियो का तो शासन केंद्र सरकार में कभी रहा ही नहीं तो फिर केंद्रीय पाठ्यक्रम में झूठ क्यों ?

देश के अनेक राज्यो में वामपंथियो का शून्य अस्तित्व, फिर भी वहा का पाठ्यक्रम हिन्दू विरोधी इस्लाम समर्थक क्यों ?

अब सुनिए वामपंथी केवल प्यादे है !

क्योंकि नेता कभी किताब नही लिखता स्कुल कालेज की!

शिक्षा विभागों में वो लोग है जो परदे के पीछे बैठे किसी विशेष हिन्दू विरोधी, भारत विरोधी तंत्र द्वारा संचालित किए जा रहे है!

अन्यथा कक्षा 9 की NCERT की किताब में 27 पेज का हिटलर का और 24 पेज का क्रिकेट का वर्णन नहीं होता इतिहास की किताब में !

सावधान हिन्दुओ !
ये नरेंद्र मोदी या भाजपा की लड़ाई नही है!
हर हिन्दू को अपने स्वर्णिम गौरवपूर्ण इतिहास को पुनर्स्थापित करने का प्रयत्न करना है!

वरना फिर से कांग्रेस शाशन आया तो
जिस तरह राम मन्दिर को बाबरी मस्जिद बताया गया !

उसी तरह भविष्य में हिन्दुओ को यही किताबो में इस्लामिक शासकों की संतान प्रजा बता दिया जाएगा !

अब इसमें आश्चर्य नही होना चाहिए क्योंकि भगत सिंह किताबो में आतंकवादी है !
और राम काल्पनिक हनुमान शराबी लिखे जा चुके कांग्रेस के शासनकाल में!

याद रहे परदे के पीछे विनाशकारी इल्लुमिनाति सदा उपस्थित है सरकार किसी की भी हो

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षणयंत्र

भाग-5

मित्रो केंद्रीय पाठ्यक्रम एवम राज्य सरकार के कक्षा 6वीं से लेकर 10 वीं तक की इतिहास की किताबो में केवल और केवल मुस्लिम शाशको को महान् बताने का प्रयत्न किया गया है और अनेक झूठी कहानियां लिखी गई उनको न्यायप्रिय दर्शाते हुए!

जबकि आज हम सब देख रहे है कि अरब देशों में शरिया कानून आज के आधुनिक युग में भी लागू है!

अब 600 वर्ष पहले से 150 साल पहले तक भारत में इस्लामिक समाज किस तरह के दंड देता रहा होगा किसी अपराध पर ?

किंतु ये अत्याचार की कहानियां पूरी तरह गायब !

तैमूर लंग ने गढ्ढे में गिरे एक हिन्दू बालक को भाले से छेद कर बाहर निकाला !
सिख गुरुओं की चमड़ी नोचवा दी गई थी !
उनके बच्चों को उनके सामने चाकू से गला काट कर मारा गया था !
सिख गुरुओं को खौलते तेल के कड़ाहे में डाल कर हत्या कर दी गई थी !

भालो की नोक पर हिन्दुओ के सर लटकाकर इस्लामिक फ़ौज शाही महल के सामने से गुजरती थी!

ऐसी ना जाने कितनी कहानियां पूरी तरह छिपा कर रखी गई आज तक इतिहास के बारे में!

क्या ये आश्चर्य की बात नहीं कि सिख गुरुओं !
सिख मत की स्थापना के उद्देश्य !
सिख गुरूओ पर इस्लाममिक अत्याचार!

गुरु ग्रंथ साहिब के विषय में बिल्कुल उल्लेख नहीं होता स्कूली किताबो में क्यो ?

ना तो केंद्रीय स्कूलों की किताबो में और ना ही राज्य सरकार के स्कूलों की किताबो में !

क्या ये योजनाबद्ध नहीं प्रतीत होता ?

किसके इशारे पर ?

अब तो देश के अनेक राज्यो में कांग्रेस सरकार नही है फिर भी पाठ्यक्रम बिल्कुल नहीं बदला जा रहा है क्यों ?

क्या परदे के पीछे बैठे कुछ लोग संसद, विधानसभा से भी अधिक शक्तिशाली है ?

आश्चर्य है न !

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षणयंत्र

भाग - 6

उत्तर भारत की स्कूली किताबो में दक्षिण के किसी इतिहास, संत, सामाजिक उत्थान के प्राचीन राजाओ, विशाल मंदिरो का कोई उल्लेख नहीं!

क्यों ?

क्योंकि दक्षिण को उत्तर से अलग रखने का पूर्ण प्रयत्न 1947 के बाद से आज तक हुआ है और जारी है!

किसके इशारे पर ?

अब तो देश के अनेक राज्यो में कांग्रेस सरकार नही है फिर भी पाठ्यक्रम बिल्कुल भी बदलाव नहीं किया जा रहा है क्यों ?

स्कूली किताब में सीधे 24 वे तीर्थंकर की चर्चा क्यों ?

यदि **जैन धर्म** के विषय में बताना है यो प्रथम तीर्थकर भगवान **ऋषभदेव जी** के बारे में क्यों नही बताते स्कूलों में ?

इसलिये नहीं बताते क्योंकि अगर बता दिया तो **जैन** को **हिन्दू** से अलग रखने का राष्ट्रविरोधी शक्तियों का खेल नहीं हो पायेगा!

भगवान ऋषभदेव इच्छावाकु वंश में जन्म लिए जिसमे सत्यावादी राजा हरिश्चन्द्र, सम्राट दिलीप, श्री राम जी ने जन्म लिया था!

इस तरह जैन सनातन हिन्दू का अभिन्न अंग है और पूर्ण रूप से अहिंसा व्रतधारी है!

जब **बुद्ध** के विषय में स्कुल में अध्याय है तो ये क्यों नहीं बताया जाता कि **अफगानिस्तान** में **200 फुट ऊँची बुद्ध की अनेक प्रतिमाएं थी** यानी भारत के सम्राट का राज्य **अफगानिस्तान** तक था!

भारत के सम्राट ने थाईलैंड तंक बौद्ध धर्म प्रसारित किया क्योंकि बर्मा, थाईलैंड सब विराट भारतवर्ष के आधीन था !
और बुद्ध हिन्दू क्षत्रिय राजा की संतान थे अर्थात

बौद्ध मत भी एक अभिन्न अँग है सनातन हिन्दू धर्म का!

भले ही वो वैदिक धर्म विरोधी है!

भारत के विद्यार्थियों को सदा से भ्रमित किया गया है!

सरकार किसी की भी हो पाठ्यक्रम कभी नहीं बदलता।

किसके इशारे पर ?

इल्लुमिनाती और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 7

यूरोप के वैज्ञानिक मनुष्य के दिमाग पर बहुत रिसर्च करते आ रहे है और निष्कर्ष निकाला कि 5 से 9 साल के बच्चे में तथ्यों को याद रखने की बहुत अद्भुत क्षमता होती है।

हमारे प्राचीन ऋषि मुनि लाखो साल पहले इस तथ्य से परिचित थे इसलिये 4 या 6 साल की उम्र में ही बालक को गुरु के अधीन कर दिया जाता था!

बचपन में आरंभिक शिक्षा में वेद मन्त्र, अनेकानेक गणितीय, वैज्ञानिक, खगोलिकीय सूत्र मंत्रो, श्लोको के मॉध्यम से रटा दिये जाते थे!

बाद में उच्च कक्षाओ में इस रटे हुए ज्ञान की मीमांसा, विश्लेषण होता था !

अर्थात गुरुकुल पध्दति के अंतर्गत पहले ज्ञान का भंडार बालक के मस्तिष्क में भर दिया जाता !

बाद की उच्च कक्षाओ में में उस ज्ञान को Processed किया जाता था !

इसलिये 20 या 25 वर्ष के गुरुकुल के विद्यार्थियों के तेज को देखकर लोग स्वयं सर झुका लेते थे!

प्राचीन काल से लेकर शायद वर्ष 1970 - 1975 तक भारत में स्कूली गाणित की प्राथमिक कक्षाओ में सवैया, अढैया के पहाड़े होते थे यानी आज की भाषा में 1.5, 2.5 का टेबल!

इस पहाड़े को रट लेने से घरेलु जीवन एवम व्यापार के अनेक कार्य जुबानी मौखिक हो जाते थे!

बड़े बड़े प्रश्नों को हल करने किसी यंत्र की आवश्यकता नहीं पडती थी!

यदि आप गाँव की छोटी सी कपड़े की दूकान से कुर्ते का 2.20 मीटर एवं पजामे का 2.75 मीटर का कपड़ा 165 रूपये मीटर के हिसाब से खरीदते तो दुकानदार तुरंत मुंहजबानी हिसाब लगा देता था!

जबकि आज अभी आपके लिए ये एक जोड़ी कपड़े का हिसाब बहुत बड़ा सिरदर्द होगा!

ये था अढैया, सवैया जैसे पहाड़ो का चमत्कार!

अब बड़े ही षड्यंत्रपूर्वक इस गणित को हटाया गया पाठ्यक्रम से ये तर्क देकर की बच्चों के दिमाग पर बहुत बोझ पड़ता है!

और इसकी जगह, बच्चों का समय नष्ट करने के लिये, kg1 से कक्षा 3 तक हिंदी, अंग्रेजी अक्षर, सीधे, टेढ़े मेढ़े, घुमावदार लिखने की किताब चला दी!

जिसका कोई उपयोग लाभ नहीं!

इन कक्षाओ में बालक केवल गिनती और अक्षर ही लिखते रह जाता है और उसके जीवन का सबसे कीमती समय नष्ट कर दिया जाता है!

कौन है षड्यंत्रकारी ?

देशी गणितीय पहाड़ो को ख़त्म कर दिया गया!

नतीजा बच्चों को केवल जोड़ घटाना ही मौखिक करते बना और गुणा, भाग के लिए लिखित कार्य करने की जरुरत होने लगी!

अब जिन बच्चों ने 1970 में प्राचीन गाणित नहीं पढ़ी थी!
जब वो 1980 में दूकान पर बैठने लगे तो साधारण हिसाब के लिये भी परेशान होने लगे फिर परिदृश्य में आता है!

छोटा वाला Casio कैलकुलेटर जिसमे जोड़, घटाना, गुणा , भाग ही रहते है!

अब 1980 के बाद से भारत की दुकानों में, हर व्यापारी के पास ये कैलकुलेटर अनिवार्य हो गया और इस तरह, प्राचीन शिक्षा प्रणाली को धवस्त करके विदेशी व्यापारी ने अपने उत्पाद को भारत में बेचकर खरबो रूपये कमा लिए, और देशी मुद्रा विदेश चले जाने से भारत फिर गरीब हो गया!

इसी तरह वैलेंटाइन नामक त्योहार भारत मे लाकर विदेशी उत्पाद चॉकलेट टॉफी आदि से खरबो रुपये कमा लेते हैं!

यूरोप, अमेरिका इस तरह अपने उत्पाद बेचने के लिए भारत की नीतियां प्रभावित करते रहते है!

जिसका प्रभाव 20 वर्ष बाद समझ आता है!

1945 से लेकर अभी तक आप एवं भारत, एशिया के सभी लोग केवल एक खिलौने है इल्लुमिनाती के हाथों!

कोई शक!

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 8

अचानक वर्ष 2013 से!

भारत के अनेक राज्यो के स्कुल कालेज में एक कार्य होना आरम्भ हुआ जिसकी शुरुआत अखिलेश सिंह की सरकार ने सबसे पहले शुरू किया!

वो है स्कूलों, कालेजो में लैपटॉप, मोबाइल बाटने का सार्वजनिक कार्य!

यानी स्कुल के बड़े बच्चे कालेज के प्रथम वर्ष के हर बच्चे को लैपटॉप मोबाइल प्रदान करना!

आस्चर्य होता है 30 हजार का लैपटाप 4 हजार का मोबाइल का खर्चा एक विद्यार्थि के ऊपर क्यों ?

ज्ञान किताबे पढ़ने से बढ़ता है या लैपटॉप, मोबाइल से!
किताबे क्यों नहीं बाटी हजार रुपये की प्रति विद्यार्थी ??

जबकि भारत देश के ग्रामीण एवम शहरी सरकारी स्कूलों में छोटी कक्षाओ में पढ़ने वाले बच्चे तप्ती धुप या कड़ाके की ठंड में नँगे पैर स्कुल जाते है!

कपड़े तक नही होते स्कुल के पहनने के लिये किताबे यदि स्कुल से मिल जाए तो कापियां नही होती लिखने के लिये!

फिर लैपटाप, मोबाइल का व्यर्थ खर्च क्यों ?
और आस्चर्य नही होता कि सपा सरकार, भाजपा सरकार, वामपंथी, कांग्रेज़, सभी लोग ये कार्य एक जैसा कर रहे है!

कारण क्या है ?

कारण स्पष्ट है कि भाारत में बिल गेट्स एवम अन्य कम्पनियो की कम्प्यूटर, मोबाइल की बिक्री टारगेट के अनुरूप नही हो पा रही थी और

चीन की Oppo, Vivo आदि कम्पनियो से कड़ी टक्कर भविष्य में मिलने की आशंका थी (जोकि आज स्पष्ट दिख रहा है)

अमेरिकन कम्पनियो ने उच्चाधिकारियो शिक्षा मंत्रियों आदि को अपने हित में कर लिया और फिर देखते ही देखते विभिन्न राज्य सरकाऱो ने विदेशी कम्पनियो की अरबो रुपए की कम्प्यूटर, मोबाइल की बिक्री पिछले 4 सालो में करवा दी!

इसको कहते है कारपोरेट बिजनेस, ना टीवी, पेपर पर विज्ञापन का खर्च ना सेल्समैन का खर्च, और शुद्ध मुनाफे का धंधा!

कुछ विशिष्ट लोगो को पटाकर और अरबो रुपए का व्यापार चुटकियों में!

साथ ही लैपटॉप, मोबाइल से हर बच्चे को अब अश्लील सामग्री स्टोर रखने देखने की पूरी सुविधा हो गई!

जोकि यूरोप यही चाहता है!

ऐसी मुफ्त की योजनाएं यूरोप या इस्लाममिक, या जापान, चीन कोरिया में क्यों नहीं होती ?

कभी सोचा ?

ये होते है इल्लुमिनाती के 50 वर्षीय योजनाबद्ध षड्यंत्र!

आप घिर चुके हो हिन्दुओ!

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 9

मित्रो प्राचीन इतिहास में मानव सभ्यता के विकास के विषय में बताते हुए स्कूली किताबो में लिखा जाता है कि
आकाश से बिजली गिरते देखकर, फिर जंगलो में आग लगते देखकर, मनुष्य ने आग के विषय में जाना, सीखा, फिर गुफा में आग जलाए रखी!

अब आप ये बताये
कि बिजली क्या गर्मी के मौसम में कड़कती है जोकि जमीन तक पहुचकर आग लगाएगी या बारिश के मौसम में बिजली कड़कने पर ऐसा आग लगना सम्भव है ?

और कितने वीर लोग है जोकि बिजली कड़कने पर उसके पास जाकर बीड़ी जलाते है, या लकड़ी जलाकर आग घर तंक ले आते है!

ये हास्यपद मूर्खतापूर्ण तथ्य मैक्समूलर ने यूरोप में पढ़ाई जाने किताबो के आधार पर भारतीय स्कूलों में लिखवाया लेकिन पंडित रविशंकर शुक्ल, मालवीय जी, गोविन्द बल्लभ पंत जैसे अनेक विद्वानों के होते हुवे भी इस झूठ का विरोध क्यों नही हुआ ?

जबकि हमारे ऋग्वेद का प्रथम मन्त्र ही अग्नि देव को समर्पित है!
और वेद पृथ्वी पर अवतरित हुआ प्रथम ज्ञान का भंडार है। ऋग्वेद में यज्ञ संपन्न करने का पूरा विवरण दिया हुआ है!

अर्थात ना केवल आग बल्कि अनाज, औषधि आदि के विषय में हमारे पूर्वज ऋषि लाखो साल पहले जानकार थे!

और मानव सभ्यता के भी पहले, पृथ्वी निर्माण के पहले, वेद पुराणो में अंतरिक्ष की घटनाओ के विषय में, सूर्य को अग्नि का गोला बताया गया है!

जब श्रष्टि के प्रथम मानव 7 मानवो, सप्तऋषियों, को अग्नि विज्ञान के बारे में बहुत कुछ ज्ञात था!

तो किसके इशारे पर यूरोप का झूठा और जूठा ज्ञान भारत के स्कूली बच्चों के दिमाग में डाला गया ?

और आश्चर्य की बात ये है कि यही ज्ञान IAS जैसे उच्च परीक्षाओं में भी पूछा जाता है!

अर्थात भारत में इतिहास के झूठ का बोलबाला पहली कक्षा से लेकर नौकरी के उच्चतम शिखर पर !

फिर सत्य प्रकट करेगा कौन ?

1947 के बाद से अभी तक इस झूठ को प्रचारित ,प्रसारित, प्रतिष्ठित करने का दोषी कौन ?

संज्ञान लीजिये!

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षणयंत्र

भाग - 10

कोलंबस ने अमेरिका खोजा!
वास्कोडिगामा ने भारत खोजा!

क्या ये पढ़ाने की जरुरत है भारत के इतिहास की किताबो में ?

कोलंबस समुद्री यात्रा पर निकला क्योंकि उसने भारत के विषय में सुन रखा था अर्थात भारत देश का स्वर्णिम अस्तित्व पहले से था और कोलंबस के देश के लोगो को ये जानकारी थी!

किंतु वो समुद्री रास्ता भटक गया और अमेरिका पहुच गया भटक गया अर्थात भारत तक पहुचाने के समुद्री रास्ते का ज्ञान या नक्शा उसके पास था!
किंतु किसी तूफ़ान आदि के कारण उसकी नौका गलत दिशा में चली गई!

कोलंबस के देश में नक्शा बनाने वाले लोगो ने पहले ही भारत घूम लिया था तभी तो नक्शा बना पाने में सफल हुए थे!

वस्सकोडिगामा!

ये समुद्री रास्ते से भारत पहुचने में सफल हुआ नाकि इसने भारत की खोज की!

वास्तव में ये सम्राट समुद्रगुप्त के विशाल व्यापारिक जहाज का पीछा करते हुए भारत आया!

तो ये दोनों घटनाएं, किस्से अगर किसी दूसरे देश के, विशेषकर यूरोप के स्कूली बच्चे पढ़े तो उचित ही है!

किंतु हम भारतीयों के लिये तो ये हास्यास्पद शब्दावली है क्योंकि भारत वर्ष का अस्तित्व तो यूरोप के हजारो वर्षो पूर्व से है और यूरोप, कैलिफोरनिया के जंगलों, अफ्रीका के जंगलों में शिवजी की मूर्तियां, होंडुरास के जंगलों में हनुमान जी की मूर्ती, मिस्र में धनुर्धारी राम और सूर्य के चित्र मिलते है!

अर्थात इन देशों में भारतीय आते जाते रहते थे किंतु
इन देशों, क्षेत्रो के निवासियों के पास, भारत तंक पहुच पाने के उचीत साधन, नौका, नक्शा, ज्ञान आदि नही होता था!

भारत के स्कूली किताबो में ये बात पढ़ाई जानी चाहिए कि विदेशियों के लिये समुद्री मार्ग का ठीक से पता वास्कोडिगामा ने लगाया!

नाकि उसने भारत को खोजा!

किंतु ये झूठ आज भी पढ़ाया जा रहा, 1947 से आज तक किसके दवाब में ?

इल्लुमिनाति

उदय राज सिंह
धीरज चौधरी 'दिवेश'

खण्ड – 2
भाग 11 से 20

इल्लुमिनाति

खण्ड – 2

भाग 11 से 20

लेखक

उदय राज सिंह

सम्पादक

धीरज चौधरी 'दिवेश'

प्रकाशक : धीरज कंप्यूटर
आवरण : धीरज चौधरी 'दिवेश'
आवरण सज्जा : धीरज चौधरी 'दिवेश'
डिजिटल मुद्रक : धीरज कंप्यूटर दिल्ली – 5
मुद्रक संपर्क : 8586918719, 8851073363
संस्करण : 2017

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 11

मित्रो भारत में 1947 के बाद अंग्रेजी विषय स्कूलों में इस तर्क के साथ आरम्भ किया गया कि यूरोप का समस्त विज्ञान अंग्रेजी में है इसलिये स्कूलों में अंग्रेजी आवश्यक है !

क्या ये आश्चर्य की बात नहीं कि 1950 में भारत की 35 करोड़ आबादी में यदि 5 करोड़ स्कूली विद्यार्थी थे तो

केवल 3 विषय !

भौतिक विज्ञान Physics
रसायन विज्ञान Chemistry
जीव विज्ञान Biology

केवल 3 विषय की कुछ शायद 40 किताबो को पढ़ाने के लिये 5 करोड़ विद्यार्थियों को अंग्रेजी क्यों सिखाने की आवश्यकता पड़ी ?

जबकि इन 40 किताबो को हिंदी में एवम अन्य प्रचलित भाषाओं में अनुवाद कर लिया जाता तो उचित होता !

केवल 40 अनुवादक ही 1 माह मेहनत करते !
5 करोड़ विद्यार्थी और आज 30 करोड़ !

परेशांनी से बच जाते कि पहले अंग्रेजी सीखो फिर विज्ञान सीखो !

साथ ही अब, जबकि अंग्रेजी के स्कुल गावो तंक में खुल चुके है, तो विज्ञान, कार्मस, आर्ट्स आदि की किताब एवम समस्त किताबे अंग्रेजी में होती है !

तो फिर अंग्रेजी मॉध्यम में पढ़ने वाला विद्यार्थी जब अंग्रेजी जानने, समझने लगा है और अपने विज्ञान, कॉमर्स आदी विषय की भाषावाली से परिचित हो चूका है !

तो क्यों अंग्रेजी मॉध्यम में होने के कारण कक्षा 9 से 12 की हर किताब अंग्रेजी में ही है तो स्कुल में कक्षा 9 से 12 तक अंग्रेजी साहित्य की 3 या 4 किताबे पढ़ाई जाती है जिसमे शेक्सपियर के नाटक, व्यर्थ की अंग्रेजी कवीताये, टाल्सटाय की कहानियां आदि रहती है !

और पाठ्यक्रम का बोझ बढ़ता है, बस्ते का बोझ बढ़ता है !
और इन व्यर्थ की किताबो से कोई ज्ञान प्राप्त नहीं होता !

क्या विदेशी लेखकों, विदेशी साहित्य की तरफ बाल बुद्धि को आकर्षित करके,
भविष्य में विदेशी प्रकाशकों की किताबें बिकवाना उद्देश्य है ?

जोकि रेलवे स्टेशनों के बुक स्टालों में स्पष्ट दिखाई पड़ता है !

यदि अंग्रेजी साहित्य ही पढ़ाना है तो अंग्रेजी में अनुवादित चाणक्य नीति, कौटिल्य अर्थशास्त्र, पंचतंत्र, मालगुडी डेज आदि क्यों नहीं पढ़ाये जाते जोकि बच्चों को बेहतर समझ आते !

जानबूझकर भारतीय साहित्य की उपेक्षा और विदेशी साहित्य को प्रसिद्ध करते जाने का 1947 से लेकर अब तक का दोषी कौन ?

सरकार बदल गई पर नीति 1 इंच भी नही बदली !
क्या अंग्रेजी परदे के पीछे कोई है ?

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग-12

सामान्य ज्ञान पर्चा !

जब भी हम किसी सरकारी नौकरी के लिये कोई परीक्षा देते है तो एक पर्चा सामान्य ज्ञान का अवश्य होता है !

क्यों ?
क्या ये अवश्यक है ?

परमाणु संस्थान, रेलवे, विमान सेवा, विमान निर्माण, खनन विभाग, स्टील उद्योग आदि में कार्य करने हेतु जब इंजिनियर, वैज्ञानिक की परिक्षा होती है !

तो विज्ञान से सम्बंधित पद के लिये, B.Sc, BE, आदि डिग्री की योग्यता निर्धारित की जाती है !

जो विद्यार्थी, जिनका शैक्षणिक चिंतन उच्च स्तर का है, नए अन्वेषण, नए विचारों, नई अभिकल्पनाओ में खोए रहते है !

जिन्होंने डिग्री में सर्वोत्कृष्ट अंक प्राप्त किये, वो ऐसी परिक्षा देने जाते है!
और फेल हो जाते है !

क्योंकि

उनको नही मालुम था कि क्रिकेट में शतक किसने सबसे अधिक बनाये!
अकबर कब मरा !
पानीपत का तीसरा युद्ध कब हुआ !
चीन की दिवार किस राजा ने बनाना आरम्भ की आदि !

संविधान की किस धारा के अंतर्गत आरक्षण की बात लिखी है !
मेक्सिको की मुख्य फसल क्या है !

अब सोचिये ये प्रश्न एक इंजिनियर के कार्य क्षेत्र वैज्ञानिक के कार्य के लिए आवश्यक है क्या ?

यदि उपर्युक्त तथ्यों की जानकारी एक परमाणु वैज्ञानिक या इसरो के वैज्ञानिक प्रत्याशी को नहीं है तो उसका या देश का कोई नुकसान हुआ ?

अब प्रतिभाशाली इंजिनियर, वैज्ञानिक 3 बार परिक्षा देते है फेल होते है क्योंकि सामान्य ज्ञान बहुत कमजोर, और फिर ये वैज्ञानिक निजी कम्पनियो, विदेशी कम्पनियो में चले जाते है और उनके लिए अविष्कार करने लग जाते है !

मित्रो एक सामान्य ज्ञान के पर्चे ने देश से ना जाने कितने ऐसे वैज्ञानिक, इंजीनियरों को भारत से निर्वासित करवा दिया !

आश्चर्य है कि साधारण विषय ज्ञान और अच्छे सामान्य ज्ञान के विद्यार्थी ऐसी परीक्षाओं में चुन लिए जाते है !

और अनेक रामानुजाचार्य, रमन, जगदीश चंद बोस जैसे हीरे विदेश जाकर स्वतन्त्रतापूर्वक काम करते हुए पूरी दुनिया में नाम कमाते है!

और इसीलिये जानबूझकर प्रतिभाशाली लोगो को भारत से भगाने के लिये ऐसी प्रतियोगी परीक्षाओं का पाठ्यक्रम बनाया गया !

तभी तो हरगोविंद खुराना को अमेरिका जाकर नोबल पुरस्कार मिला !

भारात के एक डॉक्टर ने कनाडा में सर के प्रत्यारोपण का ऑपरेशन किया !

जीरो पार्टिकल की खोज में 30 भारतीय वैज्ञानिक है, नासा में 50% भारतीय वैज्ञानिक है !

और ये सब लोग भारत से ऐसे ही पीरक्षाओ, अनुसंधान हेतु उचित वातावरण, संस्थान ना मिल पाने के कारण विदेश चले गए !

आखिर भारत के सर्वश्रेष्ठ ब्रहमपुत्रो को भगाने हेतु किसने बनाये व्यर्थ के असंगत नियम बनाये और आज तक जारी है ?

सरकार कोई भी हो नीतियां नही बदल पा रही किसके दवाब में ?

संज्ञानात्मक !

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षणयंत्र

भाग - 13

विदेशी फसल !

स्कूलों में एवम यदा कदा अखबारों में ये प्रायः लिखा रहता है कि आलू पोलैंड से आया टमाटर जापान से गन्ना ब्राजील से भारत आया आदि !

बस ये एक लाइन लिख कर फिर आगे आलू, टमाटर आदि के गुण, सब्जी बनाने की विधि, व्यंजन, औषधीय उपयोग आदि का वर्णन होता है ।

लेकिन ये कभी नहीं लिखा रहता कि भारत से कौन लेने गया था या वहां से कौन भारत लेकर आया और कब ?

एक 99% सत्य लेख की आड़ में केवल एक झूठ लिख दिया जाता है जिसको हमारा अवचेतन मस्तिष्क ग्रहण कर लेता है और ये एक तथ्य हमको जीवन भर याद रह जाता है और ऐसे ही 1% प्रतिदिन के झूठ पढ़ते हुए 10 साल का बालक 40 वर्ष की उम्र तंक मानसिक गुलाम बन जाता है!

जबकि सत्य ये है कि पुराणो में सम्राट पृथु द्वारा कृषि कार्य के विस्तार का प्रसंग आता है अग्निपुराण में हजारो औषधीयो एवम अनाज, शक्कर आदि का वर्णन है!

निघंटु ग्रंथो में आलू, प्याज, गन्ने, दाल, पालक, घी, दूध, चावल, भिन्डी आदि का औषधीय वर्णन है वो भी संस्क्रत में !

महाभारत काल में विदुर जी की पालग साग और द्रौपदी की हांडी के चावल का वर्णन है !

साथ ही भगवान् को छप्पन भोग अर्पित करने वर्णन पूजा पध्दति में है!

और प्राचीनकाल से लेकर कलियुग में भारत के सम्राट का राज्य तो पृथ्वी के अधिकांश हिस्से था जोकि कालान्तर में एशिया के कुछ हिस्से तक 1100 वर्ष पहले तक सम्राट पृथ्वीराज चौहान के समय तक रहा है !
तो फिर जापान, बर्मा, थायलैंड ये विदेश क्षेत्र कैसे हो गए ?

भारत के प्राचीन इतिहास के हिसाब से आज विशेष एकपोथिया लहसुन केवल आसाम तरफ पाया जाता है !

यदि ये कुछ 500 किलोमीटर दूर पाया जाता तो तुरंत इल्लूमिनाती के एजेंट लिख देते कि ये लहसुन भारत में चीन से आया !

(जबकि वस्तुत चीन का बहुत सारा सीमावर्ती हिस्सा कुछ दशक पहले तक भारत का ही था !)

भारत के लोगो को जंगली अज्ञानी, भारत भूमि को साधनविहीन घोषित करने के लिये मैक्समूलर की आर्यो के बाहर से आगमन की थ्योरी एवम डिस्कवरी आफ इंडिया किताब को सही साबित करने के लिये इल्लुमिनाति प्रतिदिन एक झूठ निर्मित करते जाता है और अंग्रेजी अखबार, पत्रिकाएं, मीडिया उसको प्रसारित करते है !

जो कि फिर हिंदी व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवादित होकर पुरे देश में फ़ैल जाता है और मानसिक गुलामो की संख्या में वृद्धि हो जाती है!

एक श्रृंखला के रूप में यूरोप में जन्मा झूठ भारत की किताबो, अखबारों में परोसने वाले कौन और उद्देश्य क्या ?

संज्ञानात्मक !

क्रमशः !

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षणयंत्र

भाग - 14

कम्प्यूटर

ज्ञान की वृद्धि विभिन्न किताबो के अध्ययन और चिंतन से होती है किंतु किताबो से अध्य्यन की प्रवृत्ति अब विद्यार्थियों में समाप्त प्रायः ही है !

क्योंकि कम्प्यूटर पर गूगल के मॉध्यम से सब कुछ उपलब्ध है !

अब कम्प्यूटर को कक्षा 6 से सीबीएसई स्कूली पाठ्यक्रम् में सम्मिलित किया गया है!

क्या स्कूली विद्यार्थियो के लिए ये आवश्यक है ?

आपके घर में कूलर, फ्रिज, एसी, बाइक, कार, पानी की मोटर, ट्यूबलाइट होते है !
ये सब विज्ञान नहीं है बल्कि ये विज्ञान के अंतिम सुविधाजनक उपभोक्ता उत्पाद है !

जिसको वर्तमान में Consumer Product कहते है और Consumer इसका End User अंतिम उपयोगकर्ता होता है !

तो क्या उपर्युक्त प्रतिदिन उपयोग में आने वाले वस्तुओं के विषय में स्कूल में 6वी से लेकर 10वी तक पढ़ाया जाता है ?
उत्तर - नही पढ़ाया जाता !

फिर कम्प्यूटर की पढ़ाई, इसके साफ्टवेयर, हार्डवेयर के विषय में कक्षा 6 से क्यों आरम्भ ?

क्योंकि

1. जब ये चीजे पाठ्यक्रम में होगी तो विद्यालय में हर कक्षा में कम्प्यूटर रखना होगा जोकि अभी परम्परा लागू हो चुकी है जिसके लिए भुगतान विद्यार्थियों के माता पिता करते है !

इस तरह बिना विज्ञापन, मार्केटिंग, सेल्समैन के इन सब के खर्चो को बचाते हुए !
यूरोप के एजेंटो ने यत्नपूर्वक स्कूली पाठ्यक्रम में कम्प्यूटर अध्याय डालवा दिया !
फिर स्कूलों ने कम्प्यूटर खरीदे !
मातापिता ने कम्प्यूटर खरीदे, प्रिंटर आदि सहायक वस्तुएं खरीदते जा रहे प्रतिवर्ष और इस तरह अरबो रुपए का व्यापार अमेरिका ने कर लिया !

बिना एक कदम धुप में मेहनत किये !

भारत फिर गरीब हुआ क्योंकि भारतीय अरबो रूपये की मुद्रा प्रतिवर्ष विदेश जाती है इस कम्प्यूटर आध्याय के कारण !

2. अब पाठ्यक्रम में कोई भी विषय वस्तु का वर्णन होता है जैसे प्रसिद्ध वैज्ञानिक तो शिक्षक कहते है उनकी फोटो लाओ और 2 लाइन उनके विषय में लिखकर लाओ !
तो माता पिता सायबर कैफे जाते है या घर में इंटरनेट से प्रश्नों के उत्तर खोजते है, प्रिंट करते है !

इस तरह प्रिंटर उसकी स्याही की भी अरबो रूपये की बिक्री हर घर में, बिना सेल्समैन, विज्ञापन के हो जाती है !

और भारत फिर गरीब हुआ प्रत्येक ऐसे प्रिंट पेज के साथ !

3. अब जब घर में इंटरनेट होगा तो हम किसी भी विषय को सर्च करे तो अनेकानेक फोटो के बीच में या साहित्य के नीचे अवश्य ही एक अश्लील फोटो, वीडियो आ जाता है ऐड के रूप में !

भले ही आप दुनिया के धर्म, या ईसा मसीह, या श्री राम गूगल पर लिखेगे तब भी यही परिणाम निकलेगा !
यानी एक हजार गेहू के दानों के साथ केवल 1 घुन, जोकि पुरे गेहू को बर्बाद कर देगी !

और इस अश्लील चित्र या वीडियो के साथ, इल्लुमिनाति का उद्देश्य पूर्ण होता है भारत के विद्यार्थियों को गलत दिशा में खींच लेने का !

मित्रो यही कारण है स्कूली पाठ्यक्रम में कम्प्यूटर सम्मिलित करवाने का !

कम्प्यूटर इंजीनियरिंग का एक आविष्कार है मूलभूत विज्ञान नही !

कम्प्यूटर का मूलभूत विज्ञान इलेक्टानिक्स एवं प्रोग्रामिंग है जोकि इंजीनियरिंग स्तर की होती है!

विद्यालयों में मूलभूत विज्ञान पढ़ाया जाता रहा है वर्ष 2000 तक फिर अचानक पाठ्यक्रम में इतना व्यर्थ का बदलाव कैसे ?

किसके इशारे पर ?

जिससे कि भारत की आर्थिक हानि भी हो और चारित्रिक हानि भी ?

कौन है परदे के पीछे ?

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 15

गुरु पूर्णिमा Vs शिक्षक दिवस

भारत में हिन्दुओ के विभिन्न पर्व, त्योहारों के विरुद्ध इल्लुमिनाति छिपे रूप में बहुत परिश्रम कर रहा है ताकि ये त्योहार हमारे मन से विलोपित होते जाए या फिर ऐसा प्रचार किया गया मीडिया के मॉध्यम से कि हिन्दू स्वयं अपने त्योहारों का विरोध करे !
जैसे होली पर रंग, दिवाली पर पटाखे, संक्रांति पर पतंग का आदि !

गुरु पूर्णिमा को हिन्दू (सनातन, जैन, सिख, बौद्ध) अपने गुरुजनों के चरणों में सर नवाते है !

और इस सर नवाने में प्राचीन ऋषि परम्परा, गुरुकुल परम्परा जीवित हो जाती है !
शास्त्र जीवित हो जाते है धर्म प्रतिष्ठित हो जाता है जिसका असर शेष 364 दिन तक रहता है !

तो गुरु पूर्णिमा का महत्व कम करने के लिये -

1. 1991 में केबल टीवी चैनल आरम्भ हुए और वर्ष 2000 तक जब ये गाँव तंक पहुच गये, तब 2001 से हिन्दू संतो का टीवी पर निरादर आरम्भ हुआ ध्यान दीजिए केवल उन संतो का निरादर हुआ जो कि हिन्दू धर्म को प्रतिष्ठित करने में लगे रहे !

कांग्रेस के हित में काम करने वाले या हिन्दुओ को भ्रमित करने वाले चंद्रास्वामी जैसे ढोंगी का विरोध कभी नही हुआ राधे माँ, महामंडलेश्वर अधोक्षणन्द आदि की खोजबीन, प्रमोद कृष्णन, अग्निवेश पाखण्डी का निरादर टीवी पर कभी नही किया !

किंतु हिन्दू धर्म के प्रति हिन्दुओ के भले के लिये काम करने वाले बाबा रामदेव जी, श्रृंगेरी शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती जी

पश्चिम यूरोप की इसाई धर्म-बाइबल-फ्रायड की जड़ उखाड़ने वाले **रजनीश**, जंगलो में वनवासी बच्चों के लिये स्कुल खोलने वाले -हिन्दू गरीबो के लिये कुटीर उद्योग **आसाराम बापू**, कुछ प्रयत्न महाराज **विद्यासागर** के निरादर के लिये 2004 में हुआ पर 2 दिन की खबरों के बाद ही दब गया था !

मित्रो गुरु पूर्णिमा जिस दिन पुरे भारत में विद्यार्थियो को शिक्षक के चरण छूना चाहिए था !
उस दिन को त्यौहार के रूप में बनाने की बजाय डा राधाकृष्णन के नाम पर शिक्षक दिवस मनाना आरम्भ किया !

जबकि शिक्षा क्षेत्र में इनका कोई योगदान नहीं था और इनके ऊपर आरोप भी लगा था की अपने ही छात्र की पीएचडी को कॉपी करके पहले स्वयं डॉक्टरेट की डिग्री हासिल कर ली थी !

यदि तत्कालीन किसी गुरु, शिक्षक के नाम पर शिक्षक दिवस मनाना था तो काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक पंडित मदन मोहन मालवीय जी के नाम पर क्यों नहीं ?

गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रधानन्द जी के नाम पर क्यों नहीं ?

आधुनिक भारतीय वैज्ञानिकों के प्रेरक जगदीश चंद्र बासु, डा रमन, या डा होमी जहांगीर भाभा के नाम पर क्यों नहीं ?

प्रथम आधुनिक विमान के अंतराष्ट्रीय वैदिक वैज्ञानिक शिव जी तलपड़े के नाम पर क्यो नही?

पूना के 2 आयुर्वेदिक प्लास्टिक सर्जनों के नाम पर क्यों नहीं ?

वो इसलिये नही क्योंकि इन महत्वपूर्ण लोगो में से किसी एक के भी नाम से शिक्षक दिवस या गुरु दिवस होता तो हर विद्यार्थी इनके विषय

में जानने का प्रयत्न करता और भारत के प्राचीन धर्म ग्रंथों, वेदो, पुराण आदि की तरफ आकर्षित होता !

और हां ऊपर जितने भी नाम लिखे है उनमें से प्रत्येक के सामने डा राजेंद्र प्रसाद एक साधारण व्यक्ति ही थे तो फिर उनके नाम से स्कूलों में गुरु दिवस शिक्षक दिवस क्यों नही मनाया जाता ?

किसके इशारे पर हिन्दू श्रेष्ठ वैज्ञानिकों की अनदेखी और एक साधारण चोर कांग्रेसी को जबरदस्ती पुरे भारत के स्कूलों का गुरु बना दिया गया ?

मित्रो इस तरह गुरु पूर्णिमा को शासकीय रूप से उपेक्षित कर दिया गया जिसको एक राष्ट्रीय त्यौहार होना था !

उसको मात्र हिन्दू त्यौहार ही रहने दिया और हर बार नई पीढ़ी के बच्चे इससे दूर होते जा रहे !

बिना इसका महत्व समझे और इस तरह प्राचीन ऋषियो का नाम, प्राचीन ग्रंथ, प्राचीन चरण स्पर्श परम्परा को एक झटके में नेहरू ने विलोपित करवा दिया !

किसके इसारे पर ?

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 16

बीएड, एमएड (BEd, MEd) !

मित्रो वर्ष 2000 से पहले तक स्कूलों में कार्यरत पढाने वाले शिक्षक को ही बीएड, एमएड करने का प्रावधान था !
ताकि बच्चों को पाठ सिखाने का सही तरीका, सरल तरीका, उनके मनोविज्ञान को समझने, उनको प्रोत्साहित करने के तरीके सिखाये, समझाए जा सके !

वर्ष 2000 के बाद अचानक पूरे देश में बरसाती कुकुरमुत्ते या पान की तरह बीएड कालेज खुल गए और
निजी या सरकारी स्कूल में अध्यापन कार्य हेतु ये अनिवार्य योग्यता निर्धारित कर दी गई !

क्यों ?

अब एक बात स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि

1. जिस विद्यार्थी ने कॉलेज मे 90 प्रतिशत से B.Sc या M.Sc किया है वो अधिक बुद्धिमान होगा या जिसने 60% से यही डिग्री + बीएड किया है वो ?

वर्तमान मापदंड के अनुसार 60% वाले प्रत्याशी को नौकरी हेतु योग्य माना जाएगा क्योंकि उनके पास B. Ed की डिग्री नही है!

क्या ये आश्चर्य की बात नहीं ?

आखिर इन बीएड और एमएड पाठ्यक्रम का उद्देश्य क्या है ?

तो मित्रो उद्देश्य ये है कि विद्यार्थियों का पैसा व्यर्थ करवाना !

2 साल का कीमती समय नष्ट करवाना!

और सबसे महत्वपूर्ण ये कि

योग्य प्रत्याशी यदि आर्थिक रूप से सक्षम नही है तो उसको अध्यापन कार्य में नहीं आने देना बल्कि पैसे के बल पर जो डिग्री हासिल कर ले उसको ही शिक्षक बनने का अवसर मिले और बच्चों का भविष्य खराब हो !

जोकि **इल्लुमिनाति** का उद्देश्य है !

साथ ही इन पाठ्यक्रमो में देखिये पूरी तरह यूरोप के मनोविज्ञान के अध्याय लिखे हुए हैं!

भारत से सम्बंधित तथ्यों का उल्लेख ना के बराबर है !

जबकि होना ये चाहिए इस बीएड पाठ्यक्रम में स्कूल में पढ़ने वाला विद्यार्थी यदि किसान या मोची या रिक्शेवाले की सन्तान है तो कैसे उसको प्रोत्साहित किया जाए !

संस्कारित कैसे किया जाए !

भारतीय किशोर, युवतियों को किस तरह से समझाया जाए !

किंतु बी एड, एम एड की किताबो में पूरी तरह यूरोपीय विद्वानों का साहित्य भरा हुआ है जोकि भारत के किसी भी सन्दर्भ में उपयुक्त नही!

और 2 वर्ष के लंबे पाठ्यक्रम की क्या आवश्यकता यदि केवल Teaching Techniques ही सिखानी है !

और इन बीएड कोर्सेस की विफलता स्पष्ट दिखाई देती है जब हम लोग साल में कई महीने बच्चों को क्राफ्ट वर्क हाथ में लिये हुए ऑटो या बस या रिक्शे में सवार देखते है !

और कॉपी चेक करिये तो चित्र बनाने के नाम पर व्यर्थ के चित्र बने हुए रहते है!

क्या बस या प्लेन या मॉल या बाँध का चित्र या क्राफ्ट बनाना जरूरी है जबकि आजकल हर चीज का वीडियो, फोटो गूगल पर उपलब्ध है ?

अनेक अनुभवी शिक्षकों का कहना है कि बच्चों को पढ़ाने और सम्भालने का तरीका कोई किताब नही सीखा सकती ये शिक्षक अपने अनुभव से सीखता है।

साथ ही 2 साल के कोर्स में पढ़ा हुआ कुछ याद नही रह जाता वर्तमान कक्षा के अनुरूप पढाना पड़ता है!

विशेषकर बीएड, एमएड के पाठ्यक्रम में भारतीय सभ्यता, गुरु शिक्षक सम्बन्ध, व्यवहार के विपरीत लैंगिक तथ्य दिए होते है जोकि पूर्णत: यूरोप से आयातित कापी पेस्ट है (संविधान की तरह), और कुछ आपात्तिजनक, कुछ अव्यावहारिक !

भारत के स्नातक विद्यार्थियों का समय नष्ट कराने, पैसा खींचने (अस्पताल की तरह), निर्धन योग्य प्रत्याशियों को नौकरी से दूर रखने, यूरोपीय साहित्य मनोविज्ञान को जबर्दस्ती प्रसारित करने और अंततः स्कुली बच्चों को मायाजाल में फंसाकर रखने का माध्यम है ये पाठ्यक्रम !

क्योंकि अध्यापक किसी कक्षा में वही पढ़ाता है जोकि पाठ्यक्रम में है !
जोकि अभ्यास क्रम में है !
जोकि क्राफ्ट वर्क या चित्र बनाने हेतु निर्देश है !

और इन सब कार्यो में बच्चों के माता पिता तक शामिल, व्यस्त हो जाते है तो फिर शिक्षक की बीएड डिग्री की उपयोगिता कहाँ है ?

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग -17

स्कूली समय !

(विद्यालय जाने का समय)

भारत देश का विस्तार देशांस (Longitude) 68 डिग्री पूर्व से 98 डिग्री पूर्व तक है अर्थात 30 डिग्री का फर्क !

1 डिग्री स्थल को सूर्य के सामने से पार होने में 4 मिनट लगते है ! अर्थात 30 डिग्री पार होने में 120 मिनट लगेंगे यानी 2 घण्टे !

अर्थात अरुणाचल में यदि सूर्योदय सुबह 5.30 पर दिखाई पड़ा तो गुजरात के अंतिम छोर पर सुबह 8 बजे लोगो को सूर्य के दर्शन होंगे !

इसलिये इस झंझट को दूर करने के लिये मिर्जापुर प्रायागराज से गुजरने वाले देशांश 82 डिग्री को ही आधार माना गया और समय का भारतीय समय IST का निर्धारण इसी से होता है!

और पूरे देश की घड़ियां इसी से एक साथ चलती है!

पर भारत में जहॉ कि कश्मीर का मौसम अलग, मध्यप्रदेश का अलग, हिमाचल का अलग, राजस्थान ,चेन्नई का अलग होता है तो क्या केंद्रीय विद्यालय CBSE पैटर्न के स्कूलों का पुरे देश में एक समय पर खुलना बन्द होना न्यायपूर्ण है ?

क्या इस पध्दति को स्थानिक समय स्थानिक मौसम के अनुरूप नहीं होना चाहिए ?

ये परिवर्तन आखिर क्यों नही हुआ ?

किसी व्यवस्था को परिवर्तित करते समय तर्कपूर्ण तथ्य दिए जाते है किंतु वर्ष 2000 तक 9 बजे से लगने वाला स्कुल 2001 में 7.30 बजे से लगने लगा बिना किसी स्पष्टीकरण के !

क्यों ?

जब 9 बजे से स्कुल लगता तो हिन्दू परम्परा में सुबह उठकर नहाकर बच्चे माता पिता के साथ पूजा आदि करके ही फिर पढ़ने बैठते फिर समय होने पर ऑटो या बस या अन्य साधन से स्कुल जाते !

बच्चे 6 बजे भी उठते तो मुह धोना पेट हल्का करना, नहाना फिर पेट हल्का होने के बाद हल्की भूख लगती तो कुछ हल्का नाश्ता करके जाते!

स्कुल में टिफिन खाते 12 बजे फिर 2.30 बजे वापस और रात का भोजन सबके साथ ये व्यवस्थित दिनर्चया थी !

किंतु 2001 से नई टाइमिंग के अनुसार अब बच्चे सुबह 5.30 बजे उठते है और केवल मुह धोकर ही हड़बड़ी में तैयार होकर चले जाते है !

सुबह पेट साफ नही हुआ तो स्कुल में पेट में गैस होगी ! रात का भोजन सड़ने से और इससे पेट फुला लगेगा !
सुबह नही नहा पाये तो शरीर बेचैन सा लगेगा स्कुल में, जिससे पढ़ाई से भी ध्यान हटेगा फिर 10.30 बजे लंच की छुट्टी होती है !

तो जिस बालक ने सुबह पेट साफ नही किया आंतो में सड़ते हुए भोजेन के ऊपर फिर से नए भोजन की परत आ जाती है !

नतीजा बालक का पेट फूल जाता है (स्वयं देखिये CBSC के बच्चों को पेट फुला तोंद दिखेगी) मोटापा बढ़ेगा !

आंतो में सड़े हुए भोजेन का विष होने से पेट की बीमारियां, पेशाब, कब्ज सम्बन्धी बीमारियां, सिरदर्द, यादाश्त कमजोर, बाल सफेद, आँखों में चश्मा लगने लग जाता है !

अब यही बालक दोपहर में 3 या 4 बजे तक घर पहुचता है, तो शरीर थका होता है क्योंकि भोजन व्यवस्था पूरी बिगड़ी होती है तो बालक सोता है या बेमन से ट्यूशन आदि जाता है!

और ऐसे केंद्रीय स्कुल की समय सारणी में अधिकाँश इसाई मिशनरी स्कुल होते थे पहले (फिर वर्ष 1990 से निजी स्कूल कुकुरमुत्ते की तरह खुल चुके) जिनमे ईसा मसीह की चर्चा चर्च आदि के लोग सुबह से बच्चे को दिखाई पड़ते है जिससे वो बाल्यावस्था में ही इनका मानसिक गुलाम हो जाता है और फिर जीवन में कभी चर्च का विरोध नही कर पाता !

तो मित्रो इस तरह CBSC स्कुल की टाइमिंग हिन्दू घर में विद्यार्थी की प्रात:कालिक हिन्दू धर्म प्रक्रिया को ख़त्म करने गलत अप्राकृतिक समय पर भोजन करवाके उनको रोगी बनाने की योजनाबद्ध नीति है !

डाक्टरो के लिये नए तरह के छोटे मरीजो की श्रृंखला आरम्भ हो जाती है और विदेश से आने वाली दवाईयो, बाल गिरने, बढ़ाने वाले तेलों, पेट दर्द गैस की दैवाईयो की बिक्री बढ़ जाती है !

ये पूरी की पूरी नीति एक श्रृंखलाबद्ध गीरोह की रणनीति ही जानिये !

अरुणाचल से गुजरात तक 2900 किलोमीटर के विशाल देश में भेड़ चाल क्यों और किसके दवाब में ?

परदे के पीछे कौन ?

ऐसी केंद्रीयकृत टाइमिंग की आवाश्यकता है क्या स्कूलों को ?

केंद्रीय बोर्ड को केवल पाठ्यक्रम और प्रक्रिया निर्धारित करनी चाहिए !

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग -18

आर्थिक सहायता

मित्रो CBSC पाठ्यक्रम केंद्रीय सरकार के कर्मचारियो की सुविधा के लिये आरम्भ किया गया ताकि दूसरे स्थान दूसरे राज्य में ट्रांसफर होने पर बच्चे को किसी स्कुल के पाठ्यक्रम में दिक्कत ना हो!

फिर धीऱे से इस पाठ्यक्रम को मिशनरी स्कूलों ने अपना लिया केंद्रीय विद्यालय के अलावा इन मिशनरी स्कूलों में भी केंद्र के अधिकारी, कर्मचारी अपने बच्चों को भेजने लगे विभिन्न कॉर्यक्रम होने लगे और ये स्कुल लोकप्रिय हुए चमक दमक के कारण जिससे व्यापारी वर्ग भी अपने बच्चों को भेजने लगा !

तो अब जब भी केंद्र सरकार का नया वेतनमान आता है तो इन मिशनरी स्कूलों की फीस तिगुनी हो जाती है !

महंगी फीस के कारण केंद्र के कर्मचारी इन मिशनरी स्कूलों से विमुख ना हो जाए इसके लिए वर्ष 2008 से केंद्र सरकार ने कर्मचारीयो को शिक्षा भत्ता देना आरम्भ किया (कांग्रेस सरकार ने) जोकि वर्तमान में 18 हजार रूपये प्रति स्कुली विद्यार्थी प्रतिवर्ष है यानी 2 बच्चे का 36 हजार रूपये एक कर्मचारी के द्वारा सरकार ने मिशनरी स्कूल को भिजवा दिए!

कर्मचारी सोच रहे है कि सरकार उनके बच्चे को पढ़ाने हेतु आर्थिक सहायता दे रही है जबकि वास्तव में जनता से टेक्स द्वारा वसूले गए रुपयों को एक केंद्र सरकार के कर्मचारी के मॉध्यम से मिशनरी स्कूलों तक पहुचाया जा रहा है !

जोकि फिर एकत्रित होकर अमेरिका, इंग्लैंड आदि चला जाता है और फिर विदेशी सहायता/कर्जे के रूप में वापस भारत आता है जिसके कारण आज प्रत्येक भारतीय पर 30 हजार रूपये का कर्ज है !

अगर सरकार समस्त स्कुल, कालेजो की फीस पर नियंत्रण रखती कम करवाती तो हर बच्चे को लाभ मिलता !

लेकिन उद्देश्य तो ये नही है !

केंद्र सरकार के कर्मचारी के बच्चे मिशनरी के अलावा अन्य निजी स्कूलों में भी पढ़ते है !

इस तरह शिक्षा को महंगी करने में सरकार का भी योगदान है

और अनेक स्कूलों को पहुच रही आर्थिक सहायता में से कुछ बड़ा अंश मिशनरी स्कूलों को भी पहुचता है !

कितना घुमावदार !
सफल आर्थिक रास्ता !

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 19

मित्रो भारत के स्कूली और कालेज पाठ्यक्रम में भारत के हिन्दू इतिहास को पूरी तरह विलोपित कर दिया गया 1950 से !

मोदी सरकार में 2014 में स्मृति ईरानी शिक्षा मंत्री बनी !
अत्यंत तेज तर्रार, बुद्धिमान, त्वरित जवाब देने की तीक्ष्ण बुद्धि, हर टीवी इंटरव्यू में विरोधी पत्रकार की अच्छे से धुलाई करने में क्षमतावान!

तो भारत के प्राचीन इतिहास को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने, व्यर्थ पाठ्यक्रम का बोझ हटाने और अच्छी व्यावहारिक उपयोगी शिक्षा देने हेतु ईरानी जी ने विद्वानों का एक पैनल बनाया जोकि स्कूली पाठ्यक्रम की शुद्धि के लिये जून 2014 से काम करने लगा !

टीवी पर किसी ना किसी चैनल पर हर 3 माह में उनका इंटरव्यू आता (ऐसा लगता है कि इसके बहाने, उनके मुह से उनके मंत्रालय के कार्य उगलवाये जाते थे)

उन्होंने हर इंटरव्यू में ये बात कही थी की स्कूली पाठ्यक्रम संशोधन का कार्य चल रहा है !
पत्रकार एवं कांग्रेस ने आरोप लगाए कि RSS के लोग इतिहास पाठ्यक्रम निर्धारित करने बिठाये हुए है !

लेकिन कार्य पूरा हुआ और 23 जून 2016 को ईरानी जी ने टीवी इंटरव्यू में कहा कि 29 जून 2016 को नई स्कुली शिक्षा नीति नई किताबे लागू हो जाएंगी !

लेकिन अचानक 25 जून 2016 को 4 मंत्रियों का विभाग बदला गया और ईरानी को कपड़ा मंत्री बनाया गया !

तो फिर 29 जून को पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार नई शिक्षा नीति क्यों लागू नहीं हुई ?

जो कार्य लेखन प्रकाशन पूर्ण हो चूका था केवल फीता खोलकर किताबो का विमोचन करना ही बाकी था 29 जून को तो ये कार्य क्यों नहीं हुआ ?

क्या मंत्री बदल जाने से तैयार पुल, बाँध, आरम्भ नही होते ?

2 साल से जिस कार्य की तैयारी, प्रकाशन पूर्ण हो चुका था, नए मंत्री ने उसको 29 जून या कुछ 1 माह बाद तक भी जारी कर सकता था लेकिन आज 1 वर्ष बाद भी ये नहीं हुआ !

क्या आपको याद है 2014 में दिल्ली के एक इसाई स्कुल में किसी ने पत्थर मार दिया तो ईरानी को स्कुल निरीक्षण पर जाना पड़ा और मोदी जी को राष्ट्रीय टीवी पर सफाई देनी पड़ी !

जबकि देश के अनेक स्कूलों, मदरसों, कालेजो आदि में लड़कियों से बालात्कार, हत्या तक हो जाते है और कोई साधारण राज्य सरकार का मंत्री तक कभी स्पष्टीकरण देने टीवी अखबारों में पर नहीं आता !

किंतु एक इसाई स्कुल में 1 पत्थर किसी ने तबियत से उछाल दिया तो भाजपा के हिन्दू तंत्र में छेद हो गया !

अब हम और आप सब समझ जाए कि इस इल्लुमिनाती की कितनी अधिक घुसपैठ है और मोदी भी कुछ बेबस प्रतीत हो रहे है !

संज्ञानात्मक !

क्रमशः

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 20

MBA, MCA कोर्स !

मित्रो भारत देश में शायद 1990 में MBA, MCA पाठ्यक्रम आरम्भ हुआ!

जो लोग बीएससी, बीई, बीए आदि स्नातक पाठ्यक्रम कर रहे थे या कर चुके थे तो उनको ये नए पाठ्यक्रम समझ में नही आये !
लेकिन कुछ विद्यार्थियों ने MSc में प्रवेश लिया तो कुछ ने MBA, MCA कोर्स पसंद किया !

उस समय शिवखेड़ा नाम के आदमी को पूरे भारत में मैनेजमेंट गुरु बनाकर प्रचारित किया गया !

दैनिक भास्कर ने विराट आयोजन किये हर जिला स्तर के शहर में ताकि इन नए डिग्री कोर्सेस का प्रचार हो युवा आकर्षित हो!
(और आज इस तथाकातीत मैनेजमेंट गुरु का कोई अता पता नही ये केवल एक मुखौटा था)

आगे इन नये विषयों का भविष्य बिल्कुल स्पष्ट नहीं था कि नौकरी कहाँ और कितने वेतन वाली मिलेगी ?

बीएससी के बाद आरंभिक कम्प्यूटर कोर्स करने वालो को मेरे बड़े भाई ने फटी चप्पल पहने देखा था 1989 में !

फिर 1995 में भारत में अचानक एक आर्थिक अंतराष्ट्रीय विस्फोट होता है और प्रधानमंत्री नरसिम्हाराव डंकल प्रस्ताव स्वीकार कर लेते है और GATT समझौते पर हस्ताक्षर किये जाते है !

WTO का मुख्यालय भारत में खुल जाता है और विदेशी कम्पनियो को बैंक, बीमा, उद्योग, निर्माण, विदेशी उत्पाद की भारत के खुले बाजार में मार्केटिंग, अमेरिकी कम्प्यूटर कम्पनियो के काल सेंटर भारत में खोलने की अनुमति मिल जाती है !

और अब रहस्य खुलता है 1990 में आरम्भ की गई MBA, MCA डिग्रियों का !

GATT समझौता यु ही अचानक 1995 में हस्ताक्षरित नही हुआ था !

बल्कि ये पूर्व निर्धारित वर्ष था और भारत के लोगो को दिखाने के लिये कि हमको अंतर राष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा करनी है तो 1 साल तक GATT पर भारत सरकार और WTO की नूरा कुश्ती, चर्चा, विरोध, आदि चलती रही !

फिर 1995 में नरसिम्हाराव ने हस्ताक्षर किया जोकि पूर्व निर्धारित सटीक वर्ष समय था !

अब भारत में और अंतरराष्ट्रीय बाजार हेतु विदेशी व्यापारियों कम्पनियो को नये तरह के उत्पाद की नौकरी हेतु नए तरह की व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त प्रत्याशियों की जरुरत पड़नी थी !

इस समझौते के बाद अचानक बहुत सारे मेनेजर, कम्प्यूटर संचालक, प्रोग्रामरों की आवश्यकता पड़नी थी !

तो इसकी पूर्ति के लिये 1990 से ही भारत में तैयारी आरम्भ हो चुकी थी और 1995 तक जब 5 साल में पर्याप्त डिग्री वाले लोग तैयार हो गए तो 1995 में डंकल प्रस्ताव लागू हो गया !

भारत में धड़ाधड़ विदेशी संस्थान खुलने लगे 1998 तक ये कम्पनिया भारत में पूर्ण रूप से हर बड़े शहर के स्थापित होने लगी !

बैंकों के लिये मैनेजर की योग्यता MBA (जोकि पहले MCom वाले होते थे) निर्धारित की गई, बहुराष्ट्रीय, अमेरिकन कम्पनियो के काल सेंटर, विदेशी बीमा कम्पनी एवम कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग विकसित करने हेतु कम्प्यूटर प्रोफेसनल्स की आवश्यता हुई !

तो MCA वाले डिग्री हाथ में लेकर तैयार खड़े थे, हजारो लोगो को रोजगार मिला और तत्कालीन प्रचलित वेतन से 4 गुना वेतन मिलना आरम्भ हुआ !

और इस तरह एक बना बनाया बौद्धिक इंफ्रास्ट्रक्चर विदेशी कम्पनियों को मिल गया भारतीय खर्चे पर !

और भारत के लोगो ने समझा कि कितना अच्छा हुआ पर परदे के पीछे का असली खेल कुछ और ही था !

भारत के लोग ये नही समझ पाए कि इल्लुनमिनाती के योजनाबद्घ चरण के अनुसार बैंकरों को तैयार किया गया !

भारतीयों को बहुत उच्च वेतन मिल रहा था तो नुक्सान क्या हुआ ?

नुक्सान ये हुआ कि पूरे भारत का श्रेष्ठतम दिमाग इन विदेशी कम्पनियो की सेवा में लग गया !

जो दिमाग बैकिंग, मार्केटिंग, कॉल सेंटर BPO, प्रोग्रामिंग में लग रहा था उस आविष्कारक भारतीय दिमाग को नरसिम्हाराव सरकार ने उत्पादक मालिक की जगह सेवक बना दिया !

अमेरिका की मोबाइल, कम्प्यूटर कम्पनियो को चलाने वाले कम्प्यूटर मोबाइल निर्मित करने वाले, फेसबुक, हॉटमेल का आविष्कार करने वाले भारतीय लड़के ही थे !

तो जिन लड़को को मालिक बनकर उद्योग कम्पनियो, मोबाइल, कम्प्यूटर, का निर्माण भारत में करना था !

पूरी दुनिया में भारत निर्मित सस्ते मोबाइल, कम्प्यूटर को छा जाना था और इन चीजो को विदेश में बेचकर भारत की आर्थिक स्थिति पुरे यूरोप के बजट से 100 गुनी बेहतर हो जाती केवल 10 साल में ही !

पर वही लड़के मजबूरी में 1995 से आज तक इन कम्पनियो की सेवा में 24x7 घण्टे खून सुखाते हुए लगे हुए है !

क्योंकि **1930 से लेकर अब तक की भारतीय दिमाग का अध्ययन करके ने निष्कर्ष निकाला कि भारतीयों (हिन्दू, जैन, सिख, बौद्ध) से अच्छे, विश्वासपात्र, आज्ञाकारी, बुद्धिमान दुनिया की कोई दूसरी कौम नहीं है !**

अब षड्यंत्र के तहत भारत में स्वदेशी मोबाइल, स्वदेशी कम्प्यूटर के निर्माण की अनुमति नही दी गई भारत सरकार द्वारा !

मालिक को नौकर बनाकर रखने की योजना हेतु इल्लुमिनाती कदम दर कदम कार्य निर्धारित करता है 1990 के नये पाठ्यक्रमो से स्पष्ट है !

भारत की शिक्षा नीति कोर्स सब अमेरिकन यूरोप की आवश्यकता के अनुरूप निर्धारित होता है !

इल्लुमिनाति

उदय राज सिंह
धीरज चौधरी 'दिवेश'

खण्ड – 3
भाग 21 से 30

इल्लुमिनाति

खण्ड – 3

भाग 21 से 30

लेखक

उदय राज सिंह

सम्पादक

धीरज चौधरी 'दिवेश'

प्रकाशक : धीरज कंप्यूटर
आवरण : धीरज चौधरी 'दिवेश'
आवरण सज्जा : धीरज चौधरी 'दिवेश'
डिजिटल मुद्रक : धीरज कंप्यूटर दिल्ली – 5
मुद्रक संपर्क : 8586918719, 8851073363
संस्करण : 2017

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 21

प्राथमिक पाठ्यक्रम

मित्रो द्वितीय विश्व युद्ध के समय यूरोप में केजी,नर्सरी आदि कक्षाओ का आरम्भ हुआ बच्चों को एकसाथ रखने के लिये क्योंकि हर घर के व्यस्क महिला पुरुष को गोला बारूद की फैक्टरी में युद्ध की तैयारी हेतु कार्य करना अनिवार्य था !
उनके यहां कोई विशिष्ट प्राचीन विकसित शिक्षा प्रणाली थी ही नहीं तो बच्चों को खिलौने देते थे, अक्षर ज्ञान कराते थे,कविताएं, छोटी कहानियां याद कराते थे !

1947 भारत स्वतंत्र हुआ और मौलाना अबुल कलाम जिनको भारत की प्राचीन गुरुकुल पध्दति का कोई ज्ञान, ऋषियो के ग्रंथो में उपलब्ध गणित, आयुर्वेद, विज्ञान, भूगोल की कोई जानकारी नहीं थी !

उनको देश का प्रथम शिक्षा मंत्री बनाया गया !
आस्चर्य है 32 करोड़ धर्मनिष्ठ हिन्दुओ का शिक्षमंत्री मदरसे में पढ़ा एक मौलाना क्यों ?

जबकि पंडित रविशंकर जैसे कई विद्वान उपलब्ध थे !

इस मौलाना ने एवम बाद के शिक्षा मंत्रियों ने, यूरोप की शिक्षा प्रणाली को ही भारत में लागू किया !
वहीँ के जैसे पाठ्यक्रम को यहाँ के प्राथमिक कक्षाओ में लागू किया गया !
नतीजा
बच्चे बुद्धिमान की जगह बुधू बन गए !

भारत जिसे प्राचीन ऋषियो ने जाना था कि गर्भ में ही बालक को ज्ञान ग्रहण करने की क्षमता होती है एवं ये क्षमता जन्म के बाद से 9 वर्ष तक रहती है !

आज के वैज्ञानिक इसी बात की पुष्टि करते है तो बच्चों को घर में, गुरुकुल में आज कठिन समझे जाने वाले संस्कृत विषय की शिक्षा दी जाती थी !

हजारो मन्त्र, श्लोक, नीतियां रटाये जाते थे, जोकि उनके निश्छल, शुद्ध स्मृति पटल पर जीवन भर के लिये स्थाई हो जाते थे !

यही कारण है कि प्राचीन कहानियों में हमलोग नचिकेता जैसे अत्यंत बुद्धिमान बालको की कहानियां पढ़ते है ।

आदि शंकराचार्य ने 6 वर्ष की उम्र में अनेक ग्रन्थ याद कर लिए थे !

अब आजादी के बाद स्कूलों में हिन्दू विद्यार्थी ही 95% प्रतिशत होते थे ! सरकारी स्कूलों में मुस्लिम बच्चे ना के बराबर होते थे !

इस्लामिक बस्तियो में मुस्लिम बच्चे मदरसे में पढ़ने जाते थे !

तो जिन बच्चों के DNA में वेदो, गीता के श्लोको को याद करने की क्षमता थी उन बच्चों को बचपन से कैप्टल लेटर ABCD, छोटे लेटर abcd, टेढ़ी abcd, घुमावदार abcd, अंग्रेजी कविताएं याद करने में लगा दिया !

जोकि केवल बच्चों का समय, साल बर्बाद करने का एक तरीका है ये मूर्खतापूर्ण कार्य नर्सरी से लेकर कक्षा 3 तक होता है!

जबकि मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि मेरे बड़े भाई की 4 साल की बेटी को हमलोग प्राण जी की पिंकी, चाचा चौधरी आदि कॉमिक्स पढ़कर सुनाते थे, हर चित्र पर ऊँगली रखकर संवाद पढ़ते थे !
तो बेटी को पुरे सम्वाद चित्र सहित याद हो गेये थे और फिर वो घर में अकेले ही, ट्रेन में पिंकी की कॉमिक्स खोलकर, चित्र पर ऊँगली रखकर, संवाद बोलते हुए पन्ने पलटती जाती (स्मृति के आधार पर ही, अक्षर ज्ञान नहीं था) और ट्रेन में बैठे लोग पूछते कि इतनी कम उम्र में बेटी कैसे पढ लेती है ?

हर हिन्दू (सनातन, सिख, जैन, बौद्ध) शिशु के शुद्ध DNA में प्राचीन काल के ज्ञान को स्टोर रखने का विशिष्ट गुण होता है बस उसको प्रकट कर पाने हेतु उचित प्रक्रिया, उचित गुरु चाहिए !

जो बालक ऐसे गुरु के मार्गदर्शन में पढ़ पाते है वो बचपन से विलक्षण बुद्धि के होते है !

हर साल टीवी पर केटी तुलसी, चाणक्य जैसे बालक दिखाई पड़ते है इसी पद्यति के अनुकरण के कारण !

स्वतंत्र होने के बाद भारत में 6 वर्ष की उम्र में विद्वान् हो जाने वाले शंकराचार्य !
10 वर्ष की उम्र में जटिल गणित को हल कर लेने वाले रामानुजन !
18 वर्ष की उम्र में यूरोप के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक फ्रायड को गलत सिद्ध कर देने वाले रजनीश !
15 वर्ष की उम्र में डाक्टर बन जाने वाले बालक विकसित ना हो सके !

इसलिये यूरोपीय शिक्षा प्रणाली को भारत में लागू किया गया !

किसके इशारे पर ?
किसके दवाब में ?

पहचानिये उन हिन्दू विरोधियो को !

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 22

ईसा मसीह और वेलेंटाइन डे

मित्रो भारत के स्कूलों में सर्वधर्म सद्भाव के अंतर्गत शिक्षा देने का कार्य 1947 के बाद निश्चित किया गया!

इसाई मिशनरियो को स्कुल खोलने की अनुमति दी गई।
निजी स्कूल के रूप में इसाई स्कुल हिन्दू जैन सिख ट्रस्टों द्वारा खोले गए स्कुल ही थे!

1947 में केवल जिला मुख्यालय शहर में स्थित इसाई स्कुल अब वर्तमान में तहसील से लेकर गांव तक पहुच चुके है!

तो हर इसाई स्कुल के प्रांगण में ईसा मसीह की सफ़ेद वस्त्रों में, कबूतर उड़ाते हुए, एक मूर्ति अवश्य होती है!

इन स्कूलों में जाने वाले हिन्दू बच्चे 4 साल की उम्र से ही ईसा मसीह को देखने लगते है और इसाई स्कुल के शिक्षकों को इस मूर्ति के सामने नमन करते देखते है!
बस बाल मन प्रभावित हो जाता है!

एक कहानी हम सब ने पढ़ी है कि बलिष्ठ विशाल युवा हाथी को एक मामूली सांकल से बांध कर रखा जा सकता है क्योंकि , बचपन में ही जब वो उस सांकल में बंधा हुआ था तो उस छोटे हाथी ने कई बार सांकल तोड़कर उच्छलकूद करने का प्रयत्न किया किंतु उसकी उम्र की तुलना में सांकल अधिक मजबूत होने के कारण वो तोड़ नही पाया और उसके मन में ये धारणा बन गई कि यही मेरा जीवन है इतनी ही मेरी शक्ति है!
और यही मानसिकता होने के कारण युवावास्था में वही हाथी विशाल वृक्षो को तो उखाड़ देता है किंतु शाम को सांकल में बंध जाने के बाद वो गुलाम की तरह व्यवहार करने लग जाता है एक मामूली महावत के सामने !

तो इसाई मिशनरियों ने बस इसी मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त का उपयोग किया है भारत की नई पीढ़ी को गुलाम बनाने के लिये !

जब बालक बचपन से ही इसे मसीह की मूर्ति, नतमस्तक होते शिक्षकों को देखते है तो स्वयं भी ऐसा ही करते है और उनके निश्छल मन में ईसा मसीह के प्रति अज्ञात श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है!

अब इसाई मिशनरी या उनका मीडिया!

रोज डे !
बेलेंटाइन डे !
फ्रेंडशिप डे !

आदि मनाने लग जाते है !
और नई पीढ़ी जब इन पाश्चात्य त्योहारों का इतिहास खोजती है Google पर ! तो इसाई देश का इतिहास मिलता है जिसके भगवान् ईसा मसीह होते है तो 4 साल की उम्र से ईसा मसीह को देखने वाला बालक 24 साल की उम्र में ईसाईयों द्वारा प्रचारित त्यौहार मनाने में बिल्कुल संकोच नहीं करता क्योंकि उसका अवचेतन मन इस प्रणाली को 4 साल की उम्र में स्वीकार कर चुका था !

इसाई स्कूलों में पढ़े विद्यार्थियों को आप कभी भी इसाई मत का विरोध करते नहीं पाओगे!

भले ही वो इस्लामिक आतंक का प्रखर विरोधी हो हिन्दू (सनातन, सिख, जैन, बौद्ध) धर्म में पूर्ण आस्थावान हो!
और
यही कारण है कि पिछले मात्र 30 वर्षो में न्यू ईयर, फ्रेंडशिप डे, वेलेंटाइन डे आदि हर छोटे शहर तक में प्रचलित हो चुके है !
क्योंकि अब हर छोटे शहर में इसाई स्कुल में पढ़ा 4 साल का बच्चा 24 साल का हो चुका!

और छोटी जगह में 50 ऐसे बच्चों के प्रभाव में (उस जगह के सबसे समृद्ध परिवार), 500 साधारण बच्चे उनके पीछे अनुपालन करने में लग जाते है क्योंकि प्राचीन मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि

महाजनो येन गता स पन्था:
(जिधर बड़े लोग जाते है बाकी लोग उसी रास्ते पर चल पड़ते है)

मित्रो बड़े योजनाबद्ध तरीके से एक पूरी पीढ़ी विकसित की गई है, इसाई मिशनरियों के स्कूल खोल कर!

किनके सहयोग या मार्गदर्शन में !
पहचानिये !

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 23

टारगेट वर्ष 2090

मित्रो भारत में 1947 के बाद यदि निजी शिक्षण संस्थान खुले तो हितकारिणी, जैन, सिख ट्रस्ट द्वारा खोले गए और अग्रसेन महाविद्यालय, तीर्थंकर यूनिवर्सिटी , सरस्वती शिशु मंदिर, महर्षि विद्या मंदिर आदि नाम से खोले गए!

फिर बाद में सेठ लोग अपने माता पिता के नाम से स्कुल कालेज खोलने लगे! जैसे स्व श्री बद्री सिंह जूनियर हाई स्कूल,ईश्वरदीन PG कॉलेज,देवी देबताओ,प्राचीन ऋषियो, माता पिता के नाम पर हिन्दू (सनातनी,जैन,सिख,बौद्ध) वर्ग समस्त शैक्षणिक, सामाजिक, धार्मिक कार्य करता है!

किंतु आपको आश्चर्य नहीं होता कि इसाई स्कुल केवल इसाई संत के नाम से ही क्यों खोले जा रहे है?

पिछले 100 वर्षों में इस नामकरण पध्दति में बिल्कुल भी बदलाव क्यों नही हुआ ??

एक बात हमेशा ध्यान रखिए कि किसी संस्कृति के विनाश हेतु इल्लुमिनाति 100 वर्षो की दीर्घकालीन योजना बनाता है फिर उनके वंशज इस योजना पर कार्य करते जाते है!

तो इल्लुमिनाति ने पहचाना कि गुरुकुल ही इस देश की भौतिक समृद्धि ,ज्ञान के आधार है तो 1850 से ही गाँव गाँव घूमकर गुरुकुल नष्ट कर दिये गए!

ये गुरुकुल प्राचीन ऋषियो के नाम पर चलते आ रहे थे।

फिर मिशनरियों ने स्कूल कालेज खोलने आरम्भ किये और केवल इसाई संतो के नाम पर!

इसाई स्कूल में पढ़ने वाले बालक 4 साल की उम्र से ईसा मसीह और एक इसाई सन्त का नाम जानने लग जाते है जिस स्कूल में वो पढ़ते है और इसी सन्त का फर्जी जन्मदिवस या स्मृतिदिवस अब मनाया जाने लगा है इन स्कूलों में (रोज अखबार पढ़िए ध्यान से)!

अब वर्ष 2015 तक 25 साल जिनकी उम्र है ऐसे युवक युवतियों की एक पीढ़ी तैयार हो चुकी है जो रोज डे, वेलेंटाइन डे, फ्रेंडशिप डे आदि मनाते है!

ये प्रथम चरण हुआ हिन्दू धर्म विध्वंश का!

अब इसाई संतो का जन्मदिन मनाना दूसरा चरण आरम्भ किया है इन मिशनरियों ने !

अभी ये स्कूल स्तर पर है (जैसे ऊपर लिखे डे की शुरुआत इसाई स्कूलों से हुई) और जब ये वर्तमान स्कूली पीढ़ी 25 वर्ष की उम्र की हो जायेगी !

2040 तक तो इसाई संतो के जन्मदिन फिर सामाजिक स्तर पर मनाए जाने लगेंगे (जैसे ऊपर लिखे डे अब सामाजिक स्तर पर व्यापक हो गए)
ये तीसरा चरण होगा !

(ध्यान दीजिए संत रविदास जी की जगह अब अम्बेडकर की मूर्ति ने ले ली है ये उदाहरण है बदलाव प्रक्रिया का)

और फिर चौथा चरण आरम्भ होगा जिसमें इन इसाई संतो को ही भारत देश का उद्धारक, भारत देश का ऋषि बताया जाएगा!

और फिर नेहरू की किताब डिस्कवरी आफ इंडिया का उदाहरण देते हुए बताया जाएगा कि “सेंट पाल, सेंट ऑगस्टिन, सेंट लूथर आपके (हिन्दू के) ही पूर्वज थे !”

क्योंकि नेहरू की किताब के अनुसार (और स्कूल के पाठ्यक्रम में पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार) आर्य यूरोप से भारत आये थे !

ये कार्य 2075 में आरम्भ होगा और हिन्दू लोग मानेंगे भी क्योंकि इस समय तक इसाई स्कूलों से पढ़कर निकले लोग हर गांव में होंगे !

बच्चे से लेकर बूढ़े तक इसाई स्कूल उत्पाद जिस बच्चे का जन्म 2015 में हुआ है वो बचपन 4 साल से ही इसाई डे मनाएगा !

स्कुल में इसाई संतो के जन्मदिन मनाएगा तो 2075 तक यही आदमी 60 वर्ष का होगा और इसके नाती पोते भी वही करेंगे जो दादाजी बताएंगे, सिखाएंगे ! बस नाम के हिन्दू दादाजी वही बता पाएंगे जोकि स्कुल में सीखा होगा क्योंकि धर्म के नाम पर वो सेकुलर हो चुके होंग यानी धर्मविहीन!

और इस तरह वर्ष 2090 तक इस भारत देश में हिन्दू ऋषियो की जगह इसाई ऋषि ही असली आर्यवंशी के रूप में प्रसिद्ध होंगे माने जाएंगे !

क्योंकि असली प्राचीन ऋषियो के ग्रन्थ गायब हो चुके होंगे सेकुलरवाद के नाम गीता प्रेस जैसे संस्थान बन्द किये जा चुके होंगे !
(हंस, दिनमान, ब्लिट्ज, धर्मयुग पत्रिकाएं कैसे बन्द हुई ?)

और उपलब्ध ग्रंथो या ऋषियो, देवी देबताओ के नाम को विभिन्न प्राचीन उदाहरणों प्रसंगों द्वारा बदनाम किया जा चुका होगा !

वर्तमान में शोशल मिडिया पर ये कार्य आरम्भ हो चुका है और इनके संरक्षण के लिये नेहरू ने संविधान में अभिव्यक्ति के अधिकार का कानून बना दिया था ! इलुमिनाती योजना का एक चरण, जोकि केवल हिन्दू धर्म की निंदा पर ही लागू होता आया है 1950 से अभी ओवेसी, जाकिर नाइक, पश्चिम बंगाल के बशीरहाट की घटना तक!

मित्रो नेहरूजी को यूहीं कश्मिरी ब्राह्मण नही बताया गया!

नेहरू जी से यूँ ही डिस्कवरी आफ इंडिया नही लिखवाई गई !

इस किताब के ऊपर 1990 में यूंही धारावाहिक नही बनाया गया!
सब 100 वर्षीय व्यापक योजना का एक हिस्सा है ताकि 2090 में प्रमाण के रूप ये बताया जा सके कि कश्यप ऋषि के वंसज कश्मीरी ब्राह्मण नेहरू ने ये स्वयं प्रकट होकर बताया था कि आर्य कौन थे !

सावधान हिन्दुओ !

बच्चों को प्रतिदिन अपने धर्म, अपने ऋषियो, अपनी संस्कृति, अपने वेद पुराण के विषय में बताये और प्रत्येक पुराण में लिखे अंतरिक्ष अध्याय,जम्बूद्वीप वर्णन और ब्रह्मा के वंश का वर्णन वाला आध्याय अवश्य पढ़ने को दे!
ताकि वो जान सके कि आज जो ज्ञान,धर्म दिख रहा है भारत में!

वो मेरे प्राचीन ऋषियो के कारण ही है
और मैं ही ब्रह्मा जी का वंशज हूँ!

किसी भी एक पुराण में उपर्युक्त तीन अध्याय अवश्य पढिये!
गीता प्रेस गोरखपुर की पुराण पुस्तके!

गूगल से PDF डाऊनलोड करके पढ़िए !
(ध्यान रहे जिनमे गन्दे भाष्य हों उन्हें कतई न पढ़े ये भी षणयंत्र है)

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग – 24

शैक्षणिक सत्र

मित्रो 1947 के बाद भारत में 32 करोड़ हिन्दू और 5 करोड़ मुस्लिम थे !

भारतवासियों का मुख्य व्यवसाय और कमाई का साधन कृषि ही था और व्यापार जगत भी इसी कृषि उत्पाद आधारित था उद्योग आधारित नहीं !

तो जुलाई में स्कूल खुलते हैं पूरे भारत में मार्च तक परीक्षाएं होती हैं !
फिर गेहू की फसल कटने के बाद घरों में शादियां होती थी सभी सम्बन्धी जन मामा, चाचा, फूफा,जीजा,मौसी आदि घर में विवाह कार्यक्रम में एकत्रित होते थे पारिवारिक सम्बन्ध प्रगाढ़ होते थे !
छोटे बच्चों को सभी सम्बन्धियो से स्नेह मिलता था
जोकि सभी के लिये हितकारी होता था भविष्य में !

पूरे देश में जुलाई से अप्रैल तक का सत्र लगता था और 2 माह बच्चे पूरी तरह मानसिक रूप से स्वस्थ मुक्त रहते थे !
और जेठ माह की भीषण गर्मी के पहले विवाह कार्य निपट जाते थे !

पर पता नही ये सामाजिक,पारिवारिक सद्भाव किस हिन्दू विरोधी को पसंद नही आया और शिक्षा सत्र अप्रैल से आरम्भ हुआ और भारतीय हिन्दू पारिवारिक कार्य पूरी तरह बिखर गए और अब लोग केवल 2 दिन की छुट्टी ही लेकर आ पाते है कार्यक्रम में सम्मिलित हो पाते हैं !

दूसरा पक्ष इसका ये है कि अप्रैल में शिक्षा सत्र समाप्त होने से इसाई मिशनरियों को अपने स्कूलों का ताम झाम बनाये रखने में बहुत दिक्कत होती है क्योंकि संलग्न स्टाफ़ को वेतन तो देना ही पड़ता था !
तो पहले बहुमत बढ़ाने के लिये निजी स्कूल खोलने के नियमो में शिथिलता की गई और कक्षा 4 तक तो अनुमति विशेष की आवश्यकता भी नही रही !

ये शायद 1990 के बाद की बात है !

अब निजी स्कूलों की संख्या बहुत बढ़ गई तो फिर बिना किसी मांग के बच्चों के माता पिता से पूछे बिना अचानक नियम बना दिया गया कि शिक्षा सत्र अप्रैल से आरम्भ होगा जुलाई से नहीं !

इस तरह एक झटके में देश के निजी स्कूलों को गर्मी के 2 माह की मुफ्त फीस मिलने लगी और खर्चे ताम झाम व्यवस्थित हो गए !

शहर में चलने वाले आपके परिचित का एक बहुत बड़ा स्कूल है क्या उनके कहने पर शिक्षा मंत्रालय नियम बदल देगा ?

विभिन्न नामो से संचालित शक्तिशाली इसाई लाबी ने ये सब करवाया!

देश के नीति नियमो के निर्धारक कौन ?

संज्ञानात्मक !

क्रमशः

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 25

टॉफी बांटो

मित्रो आप यदि जागरूक है तो बच्चों के लिये वर्षो पहले और आज भी टॉफी नहीं खरीदते होंगे !
किंतु बच्चों में टॉफी बाजार में टॉफी सामने क्यों रखी और इतनी बिक्री कैसे?

ईसाई आकाओं के इशारे पर मिशनरी,इसाई उद्योग, व्यापार, विज्ञापन सब एक साथ जुड़े हुए होते है ।

तो भारत में शुभ अवसरों पर मिठाई खाने खिलाने का प्रचलन रहा है!
सरकारी स्कूलों एवम अन्य स्कूलों,संस्थाओं में, 15 अगस्त, 26 जनवरी एवम अन्य अवसरों पर मिठाई, बूंदी के लड्डू , नमकीन आदि बांटे जाते रहे है!

अब भारतीय बच्चों में टॉफी कैसे लोकप्रिय हो इसके लिए इसाई स्कूलों एवम जहॉ जहॉ इसाई प्रिंसिपल आदि रहे है,वहां स्कुली बच्चों का जन्मदिन स्कुल में ही मनाने को प्रोत्साहित किया गया!

और इसके लिये बच्चों को टॉफी बाटने की प्रेरणा दी गई तो कुछ बच्चों ने ये आरम्भ किया और कुछ वर्ष बीतने पर ये एक परम्परा बन गई अब स्कूलों में!

और भारतीय लोगो की गुलामी मानसिकता ये है कि

महाजनों येन गता सा पन्था।

अर्थात-बड़े लोग,समृद्ध लोग ,जिस दिशा में चले वही अच्छा रास्ता है !

तो अन्य स्कूलों में भी ये टॉफी बाटने की परंपरा आरम्भ हो गई जबकि 1990 तक स्कुली बच्चों के दांतों में समस्याए आने पर स्कूलों में चिकित्सा परामर्श डाक्टरो द्वारा दिए जाने लगे थे जिसमें टॉफी को दांतों के लिये बहुत हानिकारक बताया गया था क्योंकि इसमें निकल, मैंगनीज आदि खतरनाक धातु तत्व होने की बात कही गई थी और टॉफी दांतो के बीच घुस जाती है तो चिपक जाती है जो कि दांत सड़ने की पहली अवस्था होती है!

जबकि गुड़ , मिठाई आदि ये प्राकृतिक तत्व होते है जोकि लार के सम्पर्क में रहते कुछ घण्टो में घुल जाते है जबकि
टॉफी अप्राकर्तिक धातु उपस्थित होने के कारण लम्बे समय तक दांतो के बीच फ़स्सि रहती है!

चाकलेट के अलग मीठे स्वाद के कारण बच्चों को ये टाफियां अच्छी लगी!
विज्ञापन दिखाये गए विशेष स्कूलों ने अप्रत्यक्क्ष मार्केटिंग में सहयोग किया और दांतों के डाक्टरो की संख्या में वृद्धि!
सम्बंधित अंग्रेजी विदेशी दवाईयो की बिक्री अरबो रूपये की प्रतिवर्ष होने लगी है!

दांतो और शरीर के लिये लाभदायक संतरे की गोली,शहद, और गुड़पाग (जिसको खाने से बुखार नही होता, लिवर स्वस्थ रहता है) गायब हो गए!

संज्ञानात्मक !

क्रमशः

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक शड्यंत्र

भाग - 26

मिशनरी स्कूल और मॉडलिंग

मित्रो आजादी के पहले और फिर बाद में भारतीय स्कूलों में यूनिफार्म का कोई विशेष नियम नहीं था !

उस समय चर्च के स्कूलों में ही विशेष यूनिफार्म होती थी !

भारतीय सरकारी स्कूलों में फिर यूनिफार्म निश्चित हुई !
अभी भी राज्य सरकार के सरकारी स्कूलों में लड़कों को फुलपैंट शर्ट और लड़कियां सलवार सूट पहनकर जाती है !

तो चर्च के स्कूलों ने लड़कियों के लिये स्कर्ट निर्धारित किया!
सम्भवतः 1990 तक स्कर्ट भरपूर लम्बे ,घुटने के काफी नीचे तक होते थे !

लेकिन चर्च के स्कूलों ने यूनिफार्म को पूरी तरह अपने हाथ में ले लिया और फिर स्कूल से ही यूनिफार्म सिलकर मिलने लगे और धीऱे धीऱे स्कर्ट घुटने के ऊपर तक कब आ गया पता ही नही चला !

कोई भी कार्य जब धीऱे धीऱे होता है तो बदलाव समझ नही आता !

तो बहन बेटियां जिस छोटे स्कर्ट को प्राथमिक विद्यालय में आसानी से बेहिचक पहन लिया वही स्कर्ट जब 8 वि कक्षा के ऊपर की कक्षाओ में छोटा होते गया तो बेटियों को बील्कुल भी मानसिक बैचेनी नही हुई (भले ही माता पिता को होती रही हो किंतु स्कूली व्यवस्था के सामने बेबस)

और जब ये लड़कियां कालेज पहुंची तो वहाँ पूरी स्वतँत्रता होने से फिर निसंकोच कुछ भी शरीर दिखाऊ वस्त्र पहनकर जाने लगी !

साथ ही स्कूलों में,कॉलेजों में,पिछले 20 वर्षों में मॉडलिंग प्रतियोगिताएं आयोजित की जाने लगी है !

अब छोटे स्कर्ट, मॉडलिंग प्रतियोगिताओं से शरीर दिखाने का भरतीय लड़कियों के मन का संकोच हट गया !
और इस तरह बॉलीवुड विज्ञापन कम्पनियो, टीवी सीरियलों, को अर्ध या पूर्ण नग्न मॉडल मिलने लगी !

विपाशा बासु, पुनम पांडेय आदि अनेकानेक नाम स्पष्ट है !

सलवार सूट उतारकर मिनी स्कर्ट तंक लाने के लिए ऊपर लिखी पूरी योजनाबद्ध प्रक्रिया अपनाई गई,30 वर्षो में क्रियान्वित की गई !

साथ ही इस कार्य की तरफ अधिक आकर्षित करने के लिये सुष्मिता सेन, ऐश्वर्या राय आदि पुरानी हीरोइनो को निरन्तर टीवी, फिल्मों के मॉध्यम से प्रचरित किया गया

और इन सबकी जड़,स्कूल में ही पड़ चुकी थी !

बैकग्राउंड चेक कर लीजिये कि नग्न प्रिय लड़कियां प्रायः किन स्कूलों से पढ़कर निकली होती आई है !

और आज 30 वर्षो से ये सब देखते देखते हम और आप सब लोग भी अभ्यस्त हो चुके हैं !

ये होती है इल्लुमिनाती कि किसी प्राचीन संस्कृति में घुसपैठ करने की नीति षड्यंत्र पूरी तरह योजनाबद्ध !

संज्ञानात्मक !

क्रमशः

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड़यंत्र

भाग - 27

टीवी पर प्रश्नोत्तरी

मित्रो 1984 से 1991 तक टीवी पर दूरदर्शन ही एकमात्र चैनल होता था 1991 के बाद केबल टीबी, अनेक चैनलों का आरम्भ हुआ!
तो दूरदर्शन पर प्रत्येक रात को समाचार के बाद कोई धारावाहिक आता फिर शास्त्त्रीय संगीत का कॉर्यक्रम आता था प्रतिदिन!

रविवार सुबह 8 से रात 11 तक पूरा मनोरंजन का दिन होता था!

रविवार को सुबह 8 बजे से रंगोली (फिल्मों के प्रसिद्ध गीत) ,रामायण या महाभारत, पंचतंत्र या खजाना (विश्व प्रसिद्ध कहानियां) आदि के धारावाहिक आते थे!
शाम 6 बजे एक हिंदी फिल्म आती थी!

इन्ही रविवारी कार्यक्रमो के बीच में 11 बजे एक विशेष कार्यक्रम आता था स्कुली विद्यार्थियों के लिये प्रश्नोत्तरी कॉर्यक्रम अर्थात Quiz!

मंच पर प्रश्नकर्ता रहते और सामने देश के विभिन्न स्कूलों से चुने हुए छात्रों की 4 जोड़ियां रहती थी। (किसी को आज तक नही पता चला कि किस तरह ये विद्यार्थी इस टीवी कार्यक्रम के लिये चुने जाते पूर्ण रहस्य)

आपको आपको आश्चर्य होगा ये जानकर कि दूरदर्शन पर प्रतिदिन केवल अंग्रेजी न्यूज ही एकमात्र अंग्रेजी कार्यक्रम आता था शेष सभी कॉर्यक्रम हिंदी में!

रविवार सुबह 8 बजे से रात टीवी बन्द होने तक हिंदी के सभी मनोरंजक कॉर्यक्रम के बीच में स्कुली बच्चों का अंग्रेजी में प्रश्नोत्तरी कॉर्यक्रम होना बहुत आश्चर्यजनक था!

किंतु अब इसका उद्देश्य एवं प्रक्रिया समझिये!

इस कार्यक्रम में 3 या चारो जोड़ी इसाई मिशनरी स्कुल की ही रहती थी एकाध जोड़ी कभी महर्षि स्कुल आदि की रहती थी!

यानी दूरदर्शन टीवी में पुरे भारत के लाखो स्कूली विद्यार्थियों के लिये एकमात्र कॉर्यक्रम यानी ज्ञानवर्धक प्रातियोगिता (Quiz Time, KBC जैसे) वो भी अंग्रेजी में वो भी इसाई मिशनरी स्कूलो के प्रभुत्व वाला !

अर्थात ये कॉर्यक्रम स्प्ष्ट रूप से भारत के विद्यार्थियों पर एवं उनके माता पिता पर अंग्रेजी मॉध्यम की तरफ आकर्षित करने हेतु मानसिक दवाब बनाने वाला कॉर्यक्रम था और कॉर्यक्रम के इसाई स्कूलों का नाम देखकर नगरों, शहरो के माता पिता तुरंत दौड़ लगाते इन स्कूलों में बच्चों को प्रवेश दिलाने हेतु ऊँची फीस लुटाकर !

मित्रो इस तरह दूरदर्शन भी एक मॉध्यम बनाया गया इसाई मिशनरी के स्कूलों को प्रचारित करने लोकप्रिय बनाने में जिसके कारण ही ये स्कूल इतने महंगे,खर्चीले हुए और माता पिता मानसिक गुलाम की तरह व्यवहार करते इन स्कूलों में घुसते रहे !

ये है इल्लुमिनाती की ताकत भारत में !

आश्चर्य है भारत के दूरदर्शन के अधिकारी भी इनकी इच्छा के अनुरूप कार्य करते रहे!

किसके दवाब में ?
जबकि दूरदर्शन तो सरकारी विभाग होता है !

संज्ञानात्मक !

क्रमशः

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड़यंत्र

भाग - 28

स्कुली विद्यार्थियों को टारगेट बनाना

मित्रो भारत के लोगो को लगता था !
और अभी भी लगता है कि अख़बार अलग है पत्रिकाएं अलग होती है !
फिल्मे कोई बनाता है !
टीवी अलग होती है!
और ये सब स्वतंत्र होते है पर
इन माध्यमो की खबरों के तरीके गुणवत्ता पर ध्यान देंगे तो पता चल जाएगा कि उपर्युक्त सबके पीछे कोई नियंत्रक भी बैठा है !

1988-89 में सुबह 8 बजे दुरदर्शन पर Teenage Turmoil नामक एक कार्यक्रम आता था जिसमे स्कुल के कक्षा 9 से ऊपर के विद्यार्थियों लड़के लड़कियों को एक दूसरे की तरफ आकर्षित होते दिखाने वाला कार्यक्रम होता था !

और ये वही समयकाल था !
जब स्कूलों में पहली बार यौन शिक्षा के नाम पर महिला पुरुष के गुप्त अंगो के चित्र सहित जीव विज्ञान की किताब में अध्याय आरम्भ हुआ था !

ये वही समयकाल था !

जब अखबारों में टेनिस खिलाड़ियों मार्टिना नवरातिलोवा के मैच के दौरान महिला खिलाड़ी के विशिष्ट अंगो को दिखाने वाले बड़े बड़े फोटो अखबारों में आते !

ये वही समयकाल था !

जब बॉलीवुड में राजकपूर की प्रसिद्ध फिल्मों में कुछ मिंन्ट का स्त्री शरीर के अंग को दिखाने वाला कोई दृश्य होता और इनकी फिल्म अंग्रेजी स्कूल पर आधारित होती थी !

ये वही समय था !

जब जो जीता वही सिकन्दर नाम की स्कूली विद्यार्थियों की प्रेम कहानी और प्रतियोगिता प्रतिद्वंदिता को लेकर फिल्म बनी जिसमे महंगे अंग्रेजी स्कूलों की प्रष्ठभूमि ही थी और इस फ़िल्म में स्कूली लड़के लड़कियों में अवैध संबंधों की बात दिखाई गई उस तरह के डायलॉग, एक्शन रखे गए !

और

ये अब वही समयकाल है !
जब एक फिल्म में एक सीन में अमिताभ के हाथ में कंडोम दिखाया गया विवाह रजिस्ट्री कार्यालय में !

ये वही समयकाल है !

जब कंडोम का सर्वजिनिक विज्ञापन आरम्भ हुआ !
और
आप सोचते है की भारत के अखबार, टीवी, फिल्मे, पत्रिकाएं अलग अलग लोगो के स्वतंत्र अधिकार में है !

मित्रो भ्रामक तथ्य है ये !

वास्तविकता ये है कि परदे के पीछे कोई है !
जो इन सब माध्यमो को एक साथ एक विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति हेतु संचालित करता है !

मॉध्यम अलग अलग पर उत्तेजक कथा कहानी एक जैसे !

एक विशिष्ट वर्ग को एक साथ एक ही समय काल में टारगेट करते हुए!

ये है इल्लुमिनाती की ताकत भारत में !

हम भारतीय इनके बनाये कुचक्र को अपनाकर आधुनिकता का परिचय देते हैं! और अपनी संस्कृति का विनाश करते हैं !

संज्ञानात्मक !
क्रमशः !

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 29

महर्षि अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय

मित्रो 1994 में राज्य मध्यप्रदेश जबलपुर की एक तहसील उमरिया में भावातीत ध्यान के प्रकटकर्ता महर्षि महेश योगी जी ने अंतरराष्ट्रीय हिन्दू वैदिक विश्व विद्यालय खोले जाने की घोषणा की !
जिसके अंतर्गत दुनिया की सबसे ऊंची 100 मंजिला भवन बनाया जाता जिसमे 1 लाख ब्राह्मण वेदो, शास्त्रो का अध्ययन करते !

इसके लिए जमीन के सर्वे हेतु विदेश विशेषज्ञों की टीम आई नक्शा तैयार हुआ करीब 50 किलोमीटर घेरे की जमीन खरीदने की प्रक्रिया आरम्भ हो गई !

निर्माण सम्बन्धी फ़ाइल मध्य प्रदेश की दिग्विजय सिंह की कांग्रेज़ सरकार के कार्यालयों में घूमती रही !

फिर जून 1997 में जबलपुर में भूकम्प आया और फिर तहसील के पटवारी ने लिखकर दिया कि भूकंप ग्रस्त क्षेत्र में 100 मंजिल इमारत बनाना खतरनाक होगा और मात्र इस पटवारी की रिपोर्ट के आधार पर कांग्रेज़ सरकार ने अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय के प्रस्ताव को पूरी तरह निरस्त कर दिया !

जबकि समस्त राष्ट्रीय मिडिया,समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, मध्यप्रदेश के सरकारी गजट में ये प्रोजेक्ट प्रकाशोत, प्रचारित जो चूका था !

इस निरस्तीकरण के विषय में भूकम्प वैज्ञानिकों भवन विशेषज्ञों महर्षि के अंतरराष्ट्रीय स्तर के इंजीनियरों से कोई सलाह विचार लिए बिना प्रस्ताव रद्द कर दिया दिग्विजय सिंह सरकार ने !

जबकि सबको मालूम है चीन जापान में हर वर्ष भूकम्प आते है तो क्या वहा ऊँची इमारतें नही बनती ?

अब सुनिए यदि ये हिन्दू अंतरराष्ट्रीय वैदिक विश्वविद्यालय बन जाता तो

1. वैदिक विज्ञान,भावातीत ध्यान के भारतीय पंडित विशेषज्ञ पूरी दुनिया में छा जाते !

2.मध्य प्रदेश में एवं फिर पुरे देश में इसाई मिशनरियों का कार्य रुक जाता क्योंकि यहां के लोग देखते कि इसाई गोरे लोग तो स्वयं हिन्दू गुरुओं के चरणों में शरणागत होते है तो फिर इसाई धर्म में क्यों जाना ?

3. वेद विज्ञान,यज्ञ विज्ञान,योग प्राणायाम, ज्योतिष विज्ञान,संस्कृत ,आयुर्वेद की दुनिया की सबसे बडी प्रयोगशाला, प्रशिक्षण शाला, महर्षि का ये संस्थान होता !
तो फिर इन क्षेत्रों में कार्य कर रही विदेशी दुकानें बंद होने लगती !

4. इस विश्वविद्यालय के खुलने के बाद इस्कान को भारत में कोई ग्राहक नही मिलते क्योंकि भारत का हिन्दू अपने धर्म, धर्मग्रंथो की शक्तियों से परिचित हो जाता !

5. शिक्षा क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा प्रवाह भारत की ओर हो जाता !

6. अंग्रेजी फिर से मलेक्षो की भाषा मानी जाती?और संस्क्रत प्रतिष्ठित हो जाती जिससे अंग्रेजी स्कुल ,कालेजी बन्द होने लगते तो इसाई मिशनरी का प्रभाव शून्य होने लग जाता और भारतीय मुद्रा जो इनके स्कूलों के माध्यम् से विदेश जाती है वो रुक जाती और उपर्युक्त कारणों से यूरोप, इंग्लैंड, अमेरिका के खजाने में बहुत गरीबी हो जाती !

तो इन कारणों से अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दू विश्विद्यालय भारत में बनाने से रोक दिया गया !

12वी तक आर्ट्स पढ़े एक पटवारी की टिप्पणी के कारण !

क्योंकि भविष्य में 2015 में दुनिया के सबसे ऊंचे भवन अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्रकारी इस्कान का निर्माण होना था !
वृंदावन में !
और अब किसी को भूकम्प, बाढ़ की चिंता नहीं सता रही !
20 वर्ष का अंतर रखकर इस्कान का षड्यंत्र सफल है !
संज्ञानात्मक ! क्रमशः

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षडयंत्र

भाग - 30

वास्तु शास्त्र

मित्रो प्राचीन भारत वर्ष में समस्त तरह का ज्ञान सप्तऋषियों को भगवान ब्रह्माजी से प्राप्त हुआ था !

मनुष्य को शिक्षित करने,जीवन निर्वाह सिखाने,कपड़ा, भोजन कृषि, नगर बसाने आदि का ज्ञान ऋषियो ने मनुष्यो को दिया जिसका उल्लेख पुराणों (अर्थात हिन्दू इतिहास ग्रन्थ) में मिलता है !

अग्निपुराण में एक नगर किस परिमाण का बसाया जाए, इसमें कौन सा भवन, किस व्यापार, कर्म के लोग किस तरफ निवास करे, सड़क, नाली, बाँध, तालाब आदि की व्यवस्था कैसी हो, इसका पूर्ण विवरण अग्निपुराण में दिया हुआ है !

घर बनाने का, घर की लंबाई चौड़ाई, आंगन आदि किस नाप के हो, ये सब विवरण भी इस ग्रंथ एवम अन्य ग्रंथो में होता है!

कोणार्क का सूर्य मन्दिर, अंकोरवाट मन्दिर, मुल्तान स्थित विशाल सूर्य मन्दिर (अब नष्ट), अजंता एलोरा गुफाएं, आमेर का किला, हवामहल, जलमहल, मांडू का किला, इन सबकी वास्तुकला के विषय में स्कूल कालेज की किताबो में कोई वर्णन नही किया जाता !
जबकि मुगलो ने जिन मंदिरो, महलों को तोड़कर उनका कुछ रूप बदल दिया उनके विषय में अवश्य किताबो में वर्णन किया जाता है !
कि ये मुग़ल+हिन्दू वास्तुकला है जिसको अमुक मुसलमान बादशाह ने बनवाया (ताकि हिन्दू भवन ध्वस्त करने की बात छिपी रहे)

मित्रो साथ ही अग्निपुराण के अध्यायों से ये स्प्ष्ट हो जाता है कि योजनाबद्ध नगर बसाने, बाँध, तालाब, सिंचाई, कृषि व्यवस्था का आरम्भ भारत से ही हुआ है !

और प्राचीन काल के सब तरह के निर्माण कार्यो में इंद्रप्रस्थ को राजधानी के रूप में स्थापित करने के समय पांडवो द्वारा बनाए गया मायामहल और

महाराज परीक्षित द्वारा सांप के जहर से मृत्यु होने से बचने हेतु बनाये गए छिद्र विहीन भवन प्राचीनकाल की अद्भुत वास्तुकला, इंजीनियरिंग के उत्तम उदाहरण थे !

प्राचीन भारतीय वास्तुकला, नगर स्थापित करने की कला, इंजीनियरिंग को भारत के स्कूली पाठ्यक्रम में पूरी तरह नकार दिया गया !
ताकि भारतीय प्राचीन हिन्दू वास्तु ज्ञान का यहां के विद्यार्थियों को पता ना चले और हर चीज को वो मुगलो, अंग्रेजो द्वारा बनाया मान ले !

पुरे देश हर स्कूल, कालेज की किताबो से ये प्राचीन विषय वस्तुज्ञान पूरी तरह गायब है !

किसके दवाब में ?

संज्ञानात्मक !